Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्प नं० १६

इक्षुकाराध्ययन

सचित्र

अनुवादक

प्रसिद्ध वक्ता पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज के शिष्य साहित्य प्रेमी पण्डित मुनि श्री प्यारचन्द जी महाराज

श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति

रतलाम

सर्वाधिकार सुरक्षित

श्री जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस रतलाम, सी. आई.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्प नं० १६

इक्षुकाराध्ययन

सचित्र

अनुवादक

प्रसिद्ध वक्ता पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज के शिष्य साहित्य प्रेमी पण्डित मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज

प्रकाशक

श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति रतलाम

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथमावृत्ति २००० मूल्य चार आने वीराब्द २४५३ विक्रम १९८३

श्री जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस रतलाम, सी. आई.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकाशक–
मास्टर मिश्रीमल
श्रीजैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति
रतलाम

मुद्रकः–
मैनेजर लक्ष्मीचन्द्र संजीतवाल्ला
जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस
रतलाम (मालवा)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निवेदन ।

प्रिय महोदय ! आज वह विषय आपके सामने रख रहा हूँ। जिसका जैनमात्र को अध्ययन एवम् बोध करना आवश्यकीय है। यह विषय श्रीमदुत्तराध्ययन सूत्र का १४ वाँ अध्याय है। जिस का मूल अर्ध मागधी भाषा में श्रीभगवान महावीर स्वामीने फरमाया। उस में यह प्रकाश डाला गया है कि, इक्षुकार राजा और कमलावती रानी एवम् भृगु पुरोहित और उसकी पतिव्रता पत्नी और दोनों युग्म कुँमारों ने किस प्रकार मुक्ति प्राप्त की। उन्हीं मूल श्लोकों पर शास्त्रविशारद् श्रीमज्जैनाचार्य पूज्यवर श्री १००८ श्री मन्नालालजी महाराज की संप्रदाय के जगत् वल्लभ प्रसिद्धवक्ता—पण्डित मुनि श्री १००८ श्रीचौथमल्लजी महाराज के शिष्य साहित्य प्रेमी पण्डित मुनि श्रीप्यारचन्दजी महाराज ने संस्कृत छाया, अन्वयार्थ और सरल भावार्थ किया है। अतः इस अध्ययन को पाठक पाठिकाओं के लाभार्थ इस संस्था की ओर से प्रकाशित कर मात्र लागत मूल्य में दिया जाता हैं।

इस में कही प्रुफ संशोधक की असावधानी से अशुद्धि रह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गई हो तो पाठक सुधार कर पढ़े और उस अशुद्धि से हमे परिचित करें, जिससे द्वितीयावृत्ति में उसका विशेष ध्यान रखा जाय।

श्रीजैनोदय पुस्तक
प्रकाशक समिति
रतलाम
ता० १-३-२७

भवदीय
मास्टर मिश्रीमल
रतलाम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ

वीतरागाय नमः ।

संक्षिप्त विवर्ण–

इस प्रसिद्ध भारतभूमि में सन् ईसा के अनेक वर्ष पूर्व "इक्षुकार" नाम की एक प्रसिद्ध नगरी थी। उसके चारों ओर खाई युक्त कोट था । कोटकी रक्षा के लिये छोटे २ किले बने हुए थे। खाई बडी गहरी और चौडी थी, जो कि स्वच्छ जल से सदैव पूर्ण भरी रहती थी । नगरी में प्रवेश करने के लिये चार दरवाजे थे , उन दरवाजों पर रक्षक लोग सदैव रक्षाके लिये नियत रहते थे। नगरी के मध्य चौक में राजा के बडे २ विशाल महल बने हुए थे । उन महलों से कुछ आगे आस पास धनिक लोगों के रंग रंगीले सुन्दर गृह और दुकानें श्रेणी बद्ध बनी हुई थीं, जिनकी अद्भुत सुन्दरता देख दर्शक का मन सहसा उनकी ओर आकर्षित हो जाता था। दुकानों के बाहर चौड़ी २ सड़कें बनी हुई थीं। सड़कों के दोनों ओर हरे भरे पेड़ लगे थे जिन की सघन छाया में मनुष्य बड़े आराम से आते जाते थे। नगर के व्यापारी लोग अनेक प्रकार की चीजें रत्न आदि देश विदेशों से मंगाकर विक्रय करते थे। अनेक चीजें अपने देश के शिल्पियों से बनवा कर बाहर अन्य देशों को भेजते थे। व्यापारी लोग व्यापार में सत्यता का पालन करते थे जिस से उनका व्यापार बढ़ा चढ़ा था। राज्यकी ओर से कोई भी ऐसा कर (महसूल) नहीं लगा था जो प्रजाको असह्य हो। सारी प्रजा राम राज्यकी तरह सुख चैन से निवास

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करती थी। राज्यकी ओर से शारीरिक और मानसिक उन्नति के लिये उचित प्रबन्ध किया गया था। किसी जन को किसी भी प्रकार का भय न था। कोई किसी को किसी प्रकार से त्रसित न कर सक्ता था। अनेक धर्मस्थान बने हुए थे, जिन में लोग अपनी २ इच्छानुकूल उन धर्मस्थानों में जाजा कर नियमित समय पर धर्मानुसार आराधना करते थे। इस प्रकार तमाम मनुष्यों का समय बडे आनन्द के साथ व्यतीत होता था।

नगर के बाहर अनेक बाग बगीचे लगाये गये थे जिन में अनेकों प्रकार के वृक्ष अपनी हरी भरी छटा दिखा रहे थे। चारों ओर फूलों की महक वायु में संचरित हो रही थी। सन्ध्या समय नगर निवासी जन अपने काम काज से निवट कर उन वाटिकाओं में आ आकर सारे दिन की थकावट को दूर कर अपने मस्तिष्क को विश्राम देते थे। मध्यान्ह समय में जब ग्रीष्म ऋतु अपना प्रचण्ड रूप धारण करती थी और सूर्य देव के द्वारा सारी भूमि अग्निकी तरह तप्त हो जातीथी तब उस समय में पथिक लोग ग्रीष्म के प्रचण्ड शासन से बचने के लिये उन वाटिकाओं में वृक्षों की सघन ठण्डी छाया का आश्रय लेते थे और वे वृक्षभी परोपकारी संत की तरह स्वयं हवा, धूप और वर्षा सहन करते हुए आये हुये पथिक लोगों को आश्रय देते थे! पशुभी ग्रीष्म की कड़ाई से व्याकुल हो कर छाया में बैठने के लिये इधर उधर घूम फिर कर वृक्षों का आसरा ले रहे थे। पक्षी गणभी उड़ना छोड़ पानी से प्यासे होकर कठिन धूपसे घबड़ा कर वृक्षों की डालियों में मुँह छिपाये बैठे थे।

ग्रीष्म ऋतु के ऐसे ही प्रचण्ड मध्यान्ह समय में उसी "ईक्षुकार" नगरीके बाहर जन-शून्य राह में दो साधु जो कि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुँह पर मुँहपत्ति, हाथमें पात्र, कुक्षि में रजोहरण, नंगे नंगे पैर, नियमित श्वेत कपड़े धारण किये हुए थे जा रहे थे। रास्ते में उन साधु जनों को अत्यन्त प्यास लगी। पर उन के पास पीने को पानी नहीं था और न वे कुआ, तालाब, नदी आदिका पानी पी सक्ते; इस से उनका कण्ठ शुष्क होता जा रहा था, अधिक प्यास के सताने से वे बोल न सक्ते थे और न चल सक्ते थे। कुछ आगे चलते चलते मूर्च्छित हो एक पेड़के नीचे गिर पड़े। कुछ समय के बीतने पर चार गोपालक (ग्वालिये) गौ, भैंसों को चराते हुए वहां आ निकले। उन्हों ने उन साधुओं को मूर्च्छित अवस्था में पड़े हुए देख कर विचार किया कि, ये श्वास तो कुछ २ ले रहे हैं पर मृत्यु के तुल्य क्यों पड़े हुए हैं? निदान इनको किसी एक दुख से पीड़ित हो मूर्च्छा आगई है, इस लिये इनको सावधान करने के लिये अपने पास में तक्र मिश्रित जल भरा हुआ है उसे इनके मुँह पर छिड़कें"। निदान उन्हों ने ऐसा ही किया और वे दोनों साधु कुछ सावचेत हुए। तब उन्हों ने ग्वालियों को ऐसा करने से मना किया कि, "ऐसा मत करो। हमारा कल्प नहीं, हमको प्यास बहुत जोर से लग रही है यदि तुम्हारे पास तक्र वगैरः कुछ हो तो हमें थोड़ा दे दो जिसे हम पी कर चित्त को शान्त्वना करें" यह सुन कर उन ग्वालियोंने कहा कि-" हाँ हमारे पास तक्र मिश्रित जल भरा हुआ है आप कृपा कर ग्रहण कीजिये"। उन चारों ही ग्वालियों ने उच्च भाव से उन्हें जल का दान दिया पर उनमें से दो ग्वालियों के दिल में फिर से कुछ कपटता आ गई जिससे उन दो ग्वालियों के स्त्रीत्व वेद का बन्धन पड गया जिससे एक तो कमलावती रानी और दूसरा यशा स्त्री हुई, पर चारों ही ने दान देते समय पडत संसार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवश्य कर लिया। तदनन्तर उन दोनों साधुओं ने उन चारों ही गोपालकों को सब से श्रेष्ठ अहिंसा परमोधर्मः और दान के महात्म्य का दिग्दर्शन कराया।

मुनि लोग वहां से विहार कर आगे दूसरे नगर को गये और यों धर्मोपदेश देते हुए अपना कालक्षेप करते रहे। इधर वे चारों ही गोपालक दया और दान पर विशेष लक्ष देते हुए समय व्यतीत कर रहे थे। ये छःओं व्यक्ति अपना २ आयुष्य पुण्यानुसार भव करते करते जो कि आगे कहेंगे, इस के अगले भव में एक ही स्वर्ग के ही "नलनी गुल्म" नाम के विमान में जन्म ले देवता हुए। वहां उन छःओं में से एक देव अपना आयुष्य पूर्ण कर ईक्षुकार नामकी नगरी में ईक्षुकार नाम का राजा हुआ। दूसरा देव वहां से मर कर इसी राजा के कमलावती नाम की रानी बनी। तीसरा देव इसी नगरी में 'भृगु' नाम का राज्य पुरोहित हुआ। और चौथा देव इसी पुरोहित की पत्नी 'यशा' हुई। शेष दो देव उस स्वर्ग के विमान में सुख मय समय बिता रहे थे।

भृगु पुरोहित धन, सम्पति से परिपूर्ण और सब ही तरह के सुखों से अपना जीवन व्यतीत करते थे। स्त्री आज्ञाकारिणी और सुन्दरता में मनोहारिणी थी। नौकर चाकर आदि की कोई कमी न थी। सब सुखों से भरपूर होने पर भी संतान सुख का अभाव था। बस इसी दुःख की चिन्ता राक्षसी रात दिन सताये रहती थी। पुत्र कामना चित्त को व्याकुल किये डालती थी। खाते, पीते, सोते, जागते; उठते, बैठते यही चिन्ता चित्त पर चढी रहती थी। इससे अधिक दुःख भृगु पुरोहित की पत्नी को संतान न होने का था। सच है दुःख होना ही चाहिये क्योंकि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिस घर में संतान नहीं वह घर सूना सा दिखाई पड़ता है। गृहस्थी को चाहे जितना कष्ट हो पर संतान हो तो उसे कष्ट नहीं सताता। वह दुःखों को संतान के सामने तुच्छ समझता है। बेचारी भृगु पत्नी इस बात से और भी अधिक दुःखी थी कि उसे सब बन्ध्या कह कर पुकारते थे और प्रातःकाल में उस का मुँह तक नहीं देखते। इसी चिन्ता में उन दोनों प्राणियों के रात दिन बीतने लगे।

इधर उन दोनों देवों का आयुष्य पूर्ण होने को था. उन्हों ने परस्पर विचार किया कि अपन लोग यहां देव हुए इस का मुख्य कारण यह है कि पिछले भव में मोक्ष के लिये संयम धारण किया था, अत एव अपन लोगों को भविष्य भव में भी संयम लेना उचित है, पर यह तो विचार करो कि यहां से मर कर कहां जन्म लेंगे। उन्हों ने अवधि ज्ञान के द्वारा जाना कि इक्षुकार नाम की नगरी में भृगु नाम के राज्य पुरोहित के घर जन्म लेंगे। पुत्र की लालसा में आकर माता पिता सद्धर्म के कट्टर विरोधी बन अपने को धर्म से विमुख करेंगे। इस से तो यह अच्छा होगा कि पहिले वहां जाकर उन्हें स्पष्ट कह दें कि तुम्हारे पुत्र तो होंगे पर वे संयम लेंगे, अतः उन्हें रोकना मत। ऐसा उनसे वचन ले आवें। ऐसा विचार कर दोनों देव मृत्यु लोक में उतरे और साधु वेष धारण कर भृगु पुरोहित के यहां आहार पानी लेने के बहाने से आये। इन आते हुए साधुओं को देख पुरोहित मन में बड़ा प्रसन्न हुआ और अपने को धन्य समझने लगा कि आज ऐसे महापुरुषों का मेरे घर पर आगमन हुआ। पुरोहित ने साधुओं के चरण स्पर्श किये और बोला-" स्वामी पधारिये, आप ने बड़ी कृपा करी, मेरा घर पवित्र किया, आज आप इस सेवक के हाथ से भोजन ग्रहण करें "। ऐसा कह कर उन दोनों साधुओं को भोजनालय में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाया। वहां पुरोहितानी पुत्र न होने की चिन्ता में उदास मुख बैठी हुई दुखित हो रही थी। उसको चिन्ता से दुखि देख पुरोहित की आंखों में भी आंसू भर आये। वहां की ऐसी घटना देख देव भिक्षु बोलेः—

" साधु आया न हर्षिया, गया न दीधा रोय।
कविरा ऐसे निगुर की, कभी न मुक्ती होय " ॥

हे! पुरोहित तेरे घर साधु आये तौभी हर्षित न होता हुआ प्रत्युत रोता है! यह क्या कारण है? क्या तेरे घर में भोजन नहीं है? क्या कोई मृत्यु को प्राप्त हुआ है? क्या धन सम्पत्ति की हानि हो गई है जिसके कारण तू और तेरी स्त्री दोनों ही रोते दिखाई पड़ते हो, कोई भी कारण हो हमें स्पष्ट बोलो। तब पुरोहित मन को शान्त कर बोलाः-" महाराज! इन में से कोई बात नहीं, कौन ऐसा हतभागी है जो कि आप जैसे साधुओं के आने से व्यग्र चित्त होये, चिन्ता की बात तो और ही है, स्वामिन् आप तो भोजन ग्रहण करिये "। तब भिक्षु बोलेः-" फिर तुम्हें ऐसी कौन सी चिन्ता है जिस से तुम लोग इतने अधीर हो रो रहे हो "। तब भिक्षुओं के बार २ आग्रह करने पर पुरोहित बोलाः- महाराज! क्या कहें, कह कह कर हार गये, बहुत उपाय किये पर हमारी चिन्ता किसी से मेटी न गई, और प्रारब्ध की चिन्ता को मेट भी कौन सक्ता है, हां आप जैसे साधु लोग हमारी चिन्ता को मेट सक्ते हैं और आशा होती है कि उस चिन्ता को आप जैसे ही महापुरुष मेटेंगे "।

इस प्रकार पुरोहित के बचन सुनकर साधु बोलेः-" भाई, हम जैन साधु हैं। मंत्र, यंत्र, तंत्र, औषध और भैषज्य आदि हम कुछ भी नहीं करते हैं फिर तुम कैसे कहते हो कि आप चिन्ता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेटेंगे "। पुरोहित बोलाः-" नहीं २ ! महाराज आप के ज्ञान व सुदृष्टि से ही चिन्ता मिट सकी है। आपके वाक्यों द्वारा ही चित्त को शान्त्वना हो जाती है। महाराज ! आप जैसे पुरुषों के दर्शन हो गये, अब भी फिर आप के भक्त की चिन्ता क्या दूर न हो सकेगी ? तब और किससे आशा की जावेगी "। ऐसा कह कर चरणों पर शिर झुका दोनों पैर पकड़ लिये। साधु बोलेः-"सुना, सुना अपना सब हाल सुना, क्या ऐसी तुझे चिन्ता है "। पुरोहित बोलाः-" स्वामिन् ! इस घर अपार सम्पति है, खाने पीने आदि कोई किसी बात की कमी नहीं। स्वामिन् ! इस घर में अभी तक एक पुत्र रत्न पैदा नहीं हुआ। पुत्र बिन पत्नी की गोद सूनी है। स्वामिन् ! पुत्र बिन घर की शोभा नहीं, बिन पुत्र घर समशान तुल्य माना जाता है। इन सब बातों से भी अधिक बात यह है कि आप की इस श्राविका को लोग बांझ बांझ कह कर मुंह तक नहीं देखते हैं। मुझे भी लोग निपुत्री कह कर पुकारते हैं। बस इसी की चिन्ता हमें रात दिन सताये रहती है। जो खाते पीते हैं वह यथा योग्य रुचता नहीं है "। साधु बोले-हमें बतलाना तो अकल्पनीय है तथापि दया लाकर तेरी चिन्ता दूर कर दें तो जैसा हम कहें वैसा करने को तैयार हो क्या "? पुरोहित बोलाः-" स्वामिन् ! यह आपने क्या कहा ! हम तो आप के दास हैं, जैसी आप आज्ञा करेंगे वैसा ही करने को तैयार हैं, यह बात प्रतिज्ञा के साथ कहते हैं "। साधु बोलेः-" अच्छा, जब तो एक पुत्र क्या है जाओ दो पुत्र होंगे, पर प्रतिज्ञा का स्मरण रखना कि वे तुम्हारे दोनों पुत्र संसार परित्याग कर साधु बनेंगे अतः उन्हें रोकना मत "। पुरोहित बोलाः-स्वामिन् ! आप के बचन मुफले, मेरे दो पुत्र हों, क्या स्वामिन्, आप को हमारा विश्वास नहीं ? कौन ऐसा दुष्ट है जो प्रभु उपासक बनने वाले को रोके,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हमारे ऐसे भाग्य कहां है जो कि मेरे कुल में से प्रभु भक्त हो ! स्वामिन् ! हम उन्हें कभी भी न रोकेंगे, भले ही वे गर्भ में से निकलते ही साधु हो जावें, यह उन की इच्छा। यह बात आप को प्रतिज्ञा के साथ कहते हैं कि हम उन्हें कदापि नहीं रोकेंगे। हम तो केवल वांझ के कलंक को दूर होना ही पर्याप्त समझते हैं। इस प्रकार कथनोपकथन के बाद दोनों देव जंगल में आ स्वर्ग में जा विराजे।

कुछ समय के पश्चात् वे दोनों ही देव अपना आयुष्य पूर्ण कर उस भृगु पुरोहित की पत्नी "यशा" के गर्भ में आये। जब मासिक आवर्तन के समय रजोदर्शन न हुआ तब उस को निश्चय हो गया कि मैं गर्भवती हूं। ऐसा निश्चय होने पर अपने आराध्य पतिदेव को कहने लगी कि "जो वे साधु कह गये थे वही मुझे निश्चय हो चुका, इससे आजही से ऐसी बातों पर पूरा ध्यान रखना अपना ध्येय समझूंगी, जिनका जानना और पालन करना प्रत्येक स्त्री का कर्तव्य है"। पुरोहित अपनी पत्नी के आशा पूरित बचन सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ और कहने लगाः-"प्रिये ! प्रथम तो जैन साधु कहते ही नहीं, यदि हमारे भाग्य से उन्हों ने कह ही दिया है तो वैसा अवश्य ही होगा"।

यशा का गर्भ दिन २ बढ़ता गया और नव महीने साढ़े सात अहो रात्रि पूर्ण होने पर युगम सन्तान का शुभ मुहूर्त्त में जन्म हुआ दो पुत्रों का जन्म होना सुन कर माता पिता और कुटुम्बी जनों का हृदय सहज ही में आनन्द सागर में हिलोरें मारने लगा। पिता और समस्त पारिवारिक लोगों ने बड़ा उत्सव मनाया। उन्होंने श्रद्धा और प्रेम से दीन अनाथ लोगों को अनेक प्रकार के दान दिये। पुरोहितजी के सब मित्र स्नेही और बन्धु बान्धवों ने भी पुत्र जन्म के इस आनन्द में उनको बधाई दी। सब ने मिल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भृगु चरित्र

। चित्र परिचय के लिये, वन्दनेके लिये नहीं है।

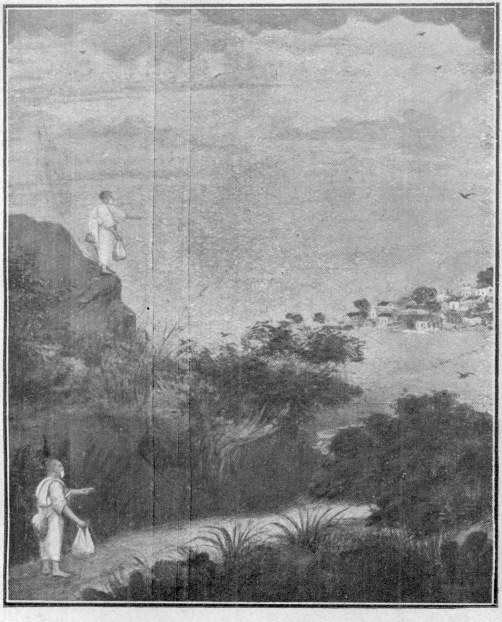

दो साधु रास्ता भूलने पर एक छोटा साधु पहाडी पर चढ कर समीप गाँव का मार्ग और गांव दिखा रहा है।

Lakshmi Art Bombay, 8.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर आशीर्वाद दिया कि " ईश्वर कृपा से यह संतान चिरायुः हो और भविष्य में ये बालक दीर्घायु हो कर खूब यश और मान प्राप्त करें "। यद्यपि यह आशीर्वाद केवल वर्तमान समय के विचारों पर दृष्टि रख कर साधारण रीति से ही दिया गया था। जैसा कि प्रायः होता है; तथापि समय पाकर वह सार्थक हुआ। पहिले दिन " जात कर्म " किया, दूसरे दिन जागरण हुआ, तीसरे दिन बालकों को चन्द्र सूर्य के दर्शन कराये गये। इस प्रकार एक के बाद एक संस्कार को करते हुए दस दिन पूरे हुए। ग्यारहवें दिन अशौचकर्म से निवर्तन हो बारहवें दिन सम्बन्धियों को भोजन खिला पिला कर दोनों युग्मपुत्रों के नाम देवभद्र और यशोभद्र रखे गये। अब वे दोनों पुत्र द्वितीय चन्द्रवत् अवस्था में बढ़ते गये। यों बढ़ते २ जब पांच छः वर्ष के होने आये तब माता पिता को पिछली बात का ख्याल आगया कि जो साधु अपने को पुत्र होने का कह गये थे वे पुत्र तो हो गये पर साथ में यह भी कह गये थे कि वे दोनों पुत्र संसार परित्याग कर साधु बनेंगे। अतः कहीं ऐसा न हो कि ये पुत्र अपने को छोड़ साधु बन जावें। इस लिये इसका उपाय अभी से ही ढूंढना अनुपयुक्त न होगा। अतएव प्रथम तो यह उपाय है कि यह शहर छोड़ कर किसी एक घने जंगल में जाकर निवास करें क्योंकि उन जैसे साधु तो इस शहर में हर समय आते ही रहते हैं और उनकी संगति भी ऐसी है कि क्षणमात्र में ही संसारी को वैरागी बना देती है। इस लिये अपने इन पुत्रों को लेकर उस घने जंगल में चल बसे जहां कोईभी साधु ऐसा न आ सके।

ऐसा विचार कर चारों व्यक्ति ने घने विपिन में जाकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भीलों की झोंपड़ियों के बीच एक मकान बन्धा लिया। वे उस जंगल के मकान में निर्विघ्नता के साथ आनन्द में पुत्रों के साथ जीवन व्यतीत करने लगे। पुरोहितजी पुत्रों को शिक्षा स्वतः देने लगे। पुरोहित के हृदय में कभी २ यह भी तरंग उठती रहती थी कि कदाचित् वैसे साधु भूले भटके इधर न चले आवें, उन साधुलोगों को देखते ही कहीं ये बालक साथ न चले जावें, इस लिये उन साधुओं का भयंकर विपरीत परिचय पुत्रों को दिखा देना अनुचित न होगा। ऐसा विचार कर वह पुरोहित सन्ध्या समय उन दोनों पुत्रों को समझाने लगाः-" पुत्रो ! मेरी एक बात जरूर ध्यान में रखना नहीं तो कभी मारे जाओगे " पुत्रोंने कहाः—" पिताजी ! वह कौनसी ऐसी भयानक बात है हमें अवश्य उस बातसे परिचय करादीजिये " तब पिताने कहाः-" पुत्रो ! तुम लड़कों के साथ आओ, जाओ, खेलो, कूदो, कोई हानि नहीं, परन्तु उन लोगों का संग मत करना जो कि मुँह पर एक कपड़ा पहिने हुए होते हैं, हाथ में एक कपड़े की झोली होती है उस में पात्र रखते हैं, पात्रों में चाकू, छुरी, कतरनी, तमंचे रखते हैं। जब वे चलते हैं तो नीची निगाह करते हुए चलते हैं। यदि कोई बालक उनके निगाहमें आता है तो पहिले वे उस बच्चे से बड़े प्यार से मधुर स्वरसे बोलते हैं। और मिष्ट पदार्थ आदि के खानेका प्रलोभ भी दिखाते हैं इस से वही बच्चा उन के पास चला जाता है फिर वे नामधारी साधु उन्हें धोखा देकर जंगल में ले जाते हैं और वहां उन बालकोंके शरीर परका पहना हुआ आभूषण उतार कर उन्हें मार डालते हैं। सो तुम सावधान रहना। पुत्रो ! हमने तो तुम्हें चेता दिया है यदि इस उपरान्त भी तुम उन लोगों के पास चले ही गये तो अवश्य ही मारे जाओगे, इस में हमारा कुछ दोष नहीं,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हम तुमको समझा चुके।" ऐसी बात सुनते ही डरसे दोनों पुत्र लपक कर माता पिता की छाती से चिपट गये और थर थर कांपते हुए रोते रोते बोले कि," हे पिताजी! गांव बाहरतो दूर रहा पर घरसे बाहर तक भी हम नहीं निकलेंगे।" पिताने समझाया-" नहीं २ पुत्रों, इतने अधीर नहीं होना चाहिये प्रथम तो ऐसे विपिन में वैसे साधु आवेंगे ही नहीं यदि आवें तो ध्यान रखना उनके पास जाना मत और दौड़कर अपने घरके भीतर चले आना। और इस बातका पूरा ध्यान रखना। पिताकी इस शिक्षा को मानकर दोनों बालक घर के आस पास ही खेलते थे और दूर न जाते थे।

कुछ दिन बीतने पर उसी जंगल में होकर दो साधु किसी नगर को जा रहे थे, परन्तु वे वहां रास्ता भूल कर विपथ में इधर उधर भटकने लगे। शिष्य ने कहा-" गुरूजी! मध्यान्ह का समय आ रहा है, प्यास बहुत जोर से सता रही है, अतःऐसा कोई उपाय करें जिस से गांव पास आने पर तक आदिकी 'याचना कर चित्तको शान्त्वना दें" गुरूने कहा-" क्या करें, अपन रास्ता भूलगये, अब ऐसा करो कि उस टेकरी पर चढ़ कर आस पास देखो कोई गांव निगाह पड़े तो वहां चलें।" ऐसाही किया कुछ दूरी पर एक छोटासा गांव दिख पड़ा। इसी गांव में भगु पुरोहितभी रहता था। वे दोनों साधु वहां से चलकर उसी गांव में आये और उत्तम घरकी शोध करते २ पुरोहित के घर के पास ही आ निकले। उन आये हुए साधुओं को देखते ही पुरोहितकी आंखें चढ़ गई और मनही मन कहने लगा-अरे इस छोटेसे गांव में भी यह लोग आ गये! इसको भी इन्होंने नहीं छोड़ा इनके दुःख से तो शहर छोड़कर यहां आये। यहां पर भी ये यम आ खड़े हुए। खैर आ गये तो इनके पात्र आ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हार, पानीसे यहीं भरदो ताकि पर्याप्त आहार पाने से और घरों में नहीं भटकेंगे, नहीं तो आहार पानी के लिये इधर उधर अन्य घरों में भटकते हुए कहीं पुत्र न मिल जाँय । बस इसी अभिप्राय से पुरोहित बोला–" महाराज ! यहां पधारो, यह ब्राह्मण का घर है "। तब वे दोनों साधु वहां गये। दही, दूध, रोटी और भोजन पर्याप्त उन्हें बहरा कर पुरोहित बोला–" महा॰ राज ! अब और घरों में मत फिरिये यदि कुछ कमी हो तो यहां से और ले लीजिये क्योंकि मेरे दो पुत्र बड़े कुपात्र और क्रोधी हैं, साधु, सन्तों को देख कर उनके कपड़े फाड़ डालते हैं । उन पर पत्थर फैंकते हैं । यदि उनके पास लकड़ी हो तो उससे मारते हैं । गालियां देते हैं । ऐसे अनेक तरह से कष्ट पहुंचाते हैं अतः आम रास्ता छोड़ कर किसी एक गली के रास्ते से निकल आप जंगल में जाकर वहां भोजन करना। गांव में कहीं न ठहरना "।

पुरोहित के कहने से वे दोनों साधु गली के रास्ते से जंगल की ओर प्रस्तान कर रहे थे तो जिस गली से जा रहे थे उसी में आगे दोनों बालक खेल रहे थे। यकायक उन साधुओं पर बालकों की दृष्टि पड़ी तो चमक कर एक ने कहा–" अरे भ्राता ! यशोभद्र ! दौड़ो २ भागो भागो। आज मौत की निशानी आ गई है । पिता ने जो चिन्ह बताये थे उन्हीं चिन्हों से चिन्हित बाल घातक आ रहे हैं। दोनों लड़के रास्ता दूसरा न होने से अपनी जान ले जंगल की ओर भागे जा रहे थे। साधु स्वाभाविक ही उनके पीछे पीछे जा रहे थे। लड़कों ने भागते हुए पीछे की ओर देखा तो जान पड़ा कि वे साधु उन्हीं की ओर जल्दी २ आ रहे हैं। इस से लड़कों ने सचमुच ही जान लिया कि ये साधु अपनी तरफ ही अपने को पकड़ने के लिये आ रहे हैं। ज्यों ज्यों उन्हें पास आते देखते त्यों २ बच्चों की जान अधिक हैरान होने लगती थी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इधर दौड़ते २ थक गये तब एक बड़ के झाड़ पर जो समीप ही था उस पर जल्दी से चढ़ गये और पत्तों की आड़ में अपने को छिपा कर बैठ गये और एक दूसरे से कहने लगे-" भाई ! खांसना मत, चुपचाप यहां छिपे रहो, जब ये बाल घातक यहां से आगे चले जावेंगे तब अपन यहां से नीचे उतर कर चले चलेंगे। उधर दोनों साधु नीची दृष्टि से देखते हुए उसी वट वृक्ष के नीचे आकर आपस में कहने लगे कि यह जगह ठीक है, अतः आहार पानी यहीं खा, पी लो। उन लड़कों ने यह सुना कि इन को यहीं मार कर आगे चलो। बस फिर क्या था, वे बच्चे और भी अधिक थर २ कांपने लगे। उन साधुओं ने पात्र खोलने की चेष्टा की तो लड़कों ने जाना कि इन्हों ने अपन को देख लिया है जिस से ये पात्रों में से मारने के लिये चाकू, छुरी आदि निकाल रहे हैं। आगे पात्र खोलने पर दूध, दही, रोटी आदि नजर आई तब बच्चों ने विचार किया कि पात्रों में से चाकू छुरी तो निकली नहीं इनके बजाय दूध, दही, रोटी निकली जो कि ऐसी अपने घर खा कर आये हैं हो न हो ये चीजें सब अपने घर की ही मालूम होती है।

इतने ही में गुरू ने शिष्य से कहा-" बेटा, ध्यान रखना, यहां कीड़ियां बहुत हैं "। कुछ ही देर पीछे बोले-" देख २ यह कीड़ी पांव नीचे न आ जावे, इसे बहुत आसानी से पूंजनी से दूर करो "। इस प्रकार का दृश्य उन दोनों लड़कों ने ऊपर से देख कर हृदय पर हाथ धर विचार किया कि ये साधु कीड़ी तक को तो मारते ही नहीं तो फिर ये बालहत्या कैसे करेंगे। इस से स्पष्ट मालूम होता है कि जो पिता ने हम को कहा था वह असंभव सा प्रतीत होता है। ऐसा विचारांश करते ही उन लड़कों को जाति स्मरण ज्ञान हो आया। उस समय ज्ञान के द्वारा अपने पिता ही

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की करतूति का परिचय मिला और सब पिछले भवों की बात से परिचित हो कर झाड़ से नीचे उतरे। तदनु साधुओं के पास आकर बोले-" स्वामिन् आप के भय से इतनी देर छिपे हुए थे। अब हमें ज्ञान हो चुका कि आप छः ही काया के जीवों के रक्षक हैं और साथ मोक्ष दाता भी हैं। संसार असार है। कोई किसी का नहीं। कौटुम्बिक जन सब स्वार्थी हैं। किये हुए कर्मों का फल आप ही अकेला भोगता है दूसरा कोई भी नहीं भोगता। अत एव हे स्वामिन्! माता पिता को पूछ कर आप के पास मौनवृत्ति साधुवृत्ति ग्रहण करेंगे; ऐसा कह कर घर की ओर आने लगे। उधर बच्चों के मा बाप इन को ढूंढने के लिये इधर उधर पुकारते हुए फिर रहे थे। इतने ही में आते हुए दोनों बच्चों को देख जोर से पुकारा-" अरे ओ पुत्रो! दौड़ कर जल्दी आओ आज गांव में बला आ गई थी"। पुत्रों ने कहा " क्यों, कैसी बला"। पिता ने कहा-" जो मैं तुम्हें हमेशा सायंकाल को उन बाल घातकों का चिन्ह बताता था, वे आज इस गांव में भी आ निकले, क्या तुम्हें वे मिले तो नहीं"? पुत्रों ने कहा-" वे तो मिल गये"। " पिता ने पूछा- " अरे! उनकी बात कुछ मानी तो नहीं। पुत्रों ने कहा-" मान ली" ।पिता ने पूछा-" अरे! क्या मानी"। पुत्रों ने कहा-" साधु बनने की बात ठान ली"। पिता ने कहा-" अरे पुत्रो! तुम्हें उन साधुओंने मधुर शब्दों से तुम्हें जाल में फँसा लिया है, पर ये लोग पहले तो ऐसाही करते हैं फिर समय पाकर उनका गला घोंट देते हैं" लड़कोंने कहा-" बस, बस, पिता रहने दो अब आपकी इन मिथ्या बातों को रहने दीजिये, हम आपकी बात अब न मानेंगे; आपने साधुओंके विषय में जो बातें बताई हैं वे इन साधुओं में नहीं है; हमने आखों से देखा इन साधुओं के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार्यों को देखा है, वे तो प्रत्यक्ष मोक्ष दाता हैं; पिताजी, यह संसार तो स्वार्थी है; अब हम इस संसार के स्वार्थी जनों में रहना नहीं चाहते; अब आप हमें तो साधु बनने की आज्ञा प्रदान करिये।" पुरोहित बोला:-" पुत्रों! कुछ सोचो, विचारो; बोलने में इतनी जल्दी मत करो। तुम अभी अबोध बालक हो, कोमल अवस्था है, बुद्धि परिपक्व नहीं, संसार सुख देखा नहीं, अभी तुम गृहस्थाश्रम में प्रवेश हुए नहीं, संसार के सुखों का अनुभव किया नहीं। तुम्हारी अवस्था अभी विद्या प्राप्त करने की है इस के पीछे युवावस्था हो जाने पर गृहस्थी बनकर विषय सुखको भोगो फिर सन्तानादि हो जाने पर यदि साधु बनना चाहो तो साधु बन जाना।" लड़कों ने कहा:-" पिताजी! पौद्गलिक सुख तो क्षणमात्र के हैं, इस के बाद वही व्यवस्था है। जैसे किसी तलवार की धारा पर शहद बिन्दु चाटने का कुछ थोड़ासा सुख है पर फिर अन्त में जीभ कट जाने का महा भयंकर दुख होता है; इस लिये ऐसे सुखों पर हमारी इच्छा कदापि नहीं, हम तो उसी सुखकी चाहना कर रहे हैं जिस में लवलेश मात्र भी दुखकी संभावना न हो।" निदान भृगु पुरोहित ने अपने पुत्रों को भोगोपभोगों के नाना प्रकारके सुख और संयम की कठिनता दिखाई पर पुत्रों ने एक न मानी और साधु बनने की दृढ प्रतिज्ञा करली।

भृगु पुरोहितने अपने पुत्रों की दृढ़ प्रतिज्ञा साधु बनने की देखी तो उसे मोह के कारण सारा संसार अन्धकार मय दिखाई पड़ने लगा और सोचने लगा कि इतनी भारी धन सम्पति होने परभी संतान सुख प्राप्त नहीं होगा तो यह धन किस काम का होगा और हृदय दुख से जलता रहेगा। इन पुत्रों को सब तरह से समझाया पर ये साधु हुये बिना न

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहेंगे। जब येही घर में न रहेंगे तब संसार में गृहस्थाश्रम में रहने से लाभ ही क्या ? इस से तो इन के साथही मुनि वृत्ति ग्रहण करना उत्तम होगा। अतएव उसने भी मुनिवृत्ति ग्रहण करने की ठान ली।

भृगु पुरोहित अपनी पतिभक्ता पत्नी के पास जाकर इस प्रकार कहने लगाः-" प्राणप्रिये ! दोनों पुत्रों के भविश्य में जो साधुओं ने कहाथा और हमें जिस बातका भयथा, जिस भय से हम नगरी छोड़कर इस बन में रहे थे, वही बात आज साधुओं के आजाने से होगई। ये अपने दोनों पुत्र साधु बनने को जा रहे हैं, कहो तुम्हारी क्या इच्छा है ? " पुरोहितानी कुछ देरतो च' कितसी रह गई पर यह सोच कर कि भविश्य में उन पुत्रोंका ऐसा ही होनाथा। धीरज धर कर स्वामी से बोलीः-" स्वामी ! पुत्र संसार परित्याग करें तो उन्हें करने दो। यह अपार सम्पति जिस के लिये मनुष्य रात दिन परिश्रम करते हैं और अनेक छल कपट से धन इकट्ठा करते हैं उस अतुल धन राशिको क्यों खोवें, आओ पुत्रों का सोच छोड़ अपन दोनों ही संसार के सुख और ऐश्वर्यका भोग भोगें। " पुरोहित बोलाः-" प्रिये ! नहीं नहीं ! सुख भोगते २ अंतिम अवस्था आगई है फिर भी भोगने की उत्कृष्ट इच्छा तुम्हें हो रही है। देखो तो सही जो अभुक्त भोगी हैं वे तो संयम ले रहे हैं और हम भुक्तभोगी और भी सांसारिक सुखों के भोगने के लिये संसार मे बैठे रहे। क्या हमारी बुद्धि इन बालकों से भी हीन है ? कभी नहीं, ऐसा न होगा। मैं भी इन बालकों के साथ संसार परित्याग कर मुनिव्रत लूंगा; यदि तेरी इच्छा हो तो तू भी संसार परित्याग कर। " जब " यशा " ने देखा कि स्वामी रहने के नहीं, पुत्र रहने के नहीं जिन से सारे संसारका सुख था तब मैं ही अकेली सं-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सारमें क्या करूंगी ? इनकी तरह से मैं भी अपनी आत्मा का कल्याण क्यों न करूं।" ऐसा पक्का विचार कर चारों ही व्यक्ति नगरी में आकर अपनी अतुल धन राशि को छोड़ साधु बन ने को घर से चल निकले।

यह समाचार सारी नगरी में बिजली की भाँति फैल कर राजा तक पहुंचा। राजा ने उस समय के नियमानुसार 'जिस धन का कोई स्वामी न रह जाय वह कोष में मंगा लिया जाय, पुरोहित के सारे धन सम्पत्तिको राज-कोष में डालने के लिये अनुचरों को आज्ञा देदी। वे लोग पुरोहित की सारी धन सम्पत्ति को ला लाकर राज्य कोष में डालने लगे। यह समाचार रानी कमलावती को मालुम हुआ तो उस ने राजा से निवेदन किया:-" प्राणनाथ ! दान में जो द्रव्य आप दे चुके हो उसे पीछा लौटाना बुद्धिमानों का काम नहीं है, दिये दान को तो छूनेका भी विचार न करना चाहिये। राजा बोला:-" रानी ! संभलकर बोलो राज्य भंडार में तो ऐसे ही धन आता जाता है, यदि तुम्हारे को पसन्द न हो तो संसार में क्यों बैठी हुई इसी धन से मौज उड़ा रही हो ?" रानी बोली-" प्राणनाथ ! मैं इस मौज को मौज नहीं समझती वरन् बन्धन समझती हूं। जैसे सोने के पिंजरे में तोता भी बन्धन रूप दुख अनुभव करता है। इसी प्रकार हे राजन् मैं भी इन पौद्गलिक सुखों के बन्धन में दुख समझती हूँ! मेरा मन इन सुखों से उपरति हो रहा है। आप आज्ञा प्रदान करें तो मैं भी साध्वी बनूंगी और इसकी मुझे उत्कट इच्छा हो रही है सो हे स्वामी, इस विनय को स्वीकार कीजिये और श्रीमहाराज, आपसे भी विनय करती हूं कि आपभी सोचिये क्या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आप अमर होकर आये हैं ? आप जैसे अनेक राजा इस भू मण्डल पर चक्रवर्त्ती होकर अन्त इस नश्वर शरीर को छोड़ कर चल बसे ! यह पृथ्वी, यह वैभव, यह हकूमत, यह राज भण्डार, यह हाथी-घोड़े आदि सब वैभव यहां का यहीं रह गया कोई भी प्यारा बन्धव, स्नेही, मित्र, सेना, शत्रु साथ में न चला ! यदि आपने इन सब ठाट पाट, सुख-चैन, वैभव को न छोड़ा तो एक दिन ऐसा आवेगा कि जब ये सब स्वयं ही आप को छोड़ देंगे। तब आप स्वयं ही राज्य सुखों को छोड़ मोक्ष जानेका प्रयत्न क्यों न करें।" इतना सुनते ही राजाको भी वैराग्य हो आया और वैराग्य अवस्था में आकर अपने पुत्र को राज्य भार सौंप दिया और आप स्वयं रानीको वैराग्य की आज्ञा दे कर संयमी बनाई। तदनु राजा और रानी पुरोहित और पुरोहितानी, दोनों बालक ये छःओं ही व्यक्ति संयम धारण कर अनेक जन्म जन्मांतर के किये हुए पापों को तपव्रत से भस्म कर मोक्ष चले गये। इति शम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ

असिआउसाय नमः

मङ्गलाचरणम्

मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमः प्रभुः ।
मङ्गलं स्थूल भद्राद्यो, जैन धर्म्मोस्तुमङ्गलम् ॥ १ ॥

मूल-देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि,
केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे,
खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥ १ ॥

सकम्मसेसेण पुराकएणं,
कुलेसु दग्गेसु य ते पसूया ।
निव्विण्णसंसारभया जहाय,
जिणिन्दमग्गंसरणंपवन्ना ॥ २ ॥

छाया-देवा भूत्वा पूर्वस्मिन् भवे,केचिच्च्युता एकविमानवासिनः।
पुरे पुराण इक्षुकारनाम्नि, ख्याते समृद्धे सुरलोकरम्ये ॥ १ ॥

स्वकर्मशेषेण पुरा कृतेन, कुलेषूदग्रेषु ते प्रसूताः ।
निर्व्विण्णाः संसारभयाद्विहाय, जिनेन्द्रमार्गं शरणं प्रपन्नाः ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्वयार्थ-(केचित्) कई एक (पूर्वस्मिन्) पहिले (भवे) जन्म में (एकविमानवासिनः) एक विमान में रहने वाले (देवाः) देव (भूत्वा) हो कर 'तदनु वहां से' (च्युताः) पतन को प्राप्त हो (पुरा) पूर्व जन्म में (कृतेन) किये हुए (स्वकर्मशेषेण) अपने कर्म के अवशिष्ट अंश से (ख्याते) सुप्रसिद्ध (समृद्धे) समृद्धिशाली (सुरलोकरम्ये) स्वर्ग के समान रमणीय (इक्षुकारनाम्नि) इक्षुकार नामक (पुराणे) प्राचीन (पुरे) नगर में (ते) वे (उदग्रेषु) ऊंचे (कुलेषु) कुलों में (प्रसूताः) उत्पन्न हुवे (संसारभयात्) संसार के भय से (निर्विण्णाः) उद्वेग पा कर (हित्वा) 'संसार का' परित्याग कर (जिनेन्द्रमार्गं) जिनेन्द्र के मार्ग की (शरणं) शरण (प्रपन्नाः) प्राप्त हुए ॥ १ ॥ २ ॥

भावार्थ-कई एक जीव पहले जन्म में एक ही पद्मगुल्म नाम के विमान में अपनी आयुः पूर्ण कर पूर्व भव के संचित शुभ कर्म के रहे हुए शेष भाग से सुरलोक के सदृश मनोहर प्रसिद्ध धन धान्य आदि ऋद्धि युक्त इक्षुकार नामक नगर में प्रधान कुल में उत्पन्न हुए। तदनु कुछ समय के बाद सद्गुरु के सदोध द्वारा संसार के जन्म मरण आदि दुःखों से भयभीत हो कर जिनेन्द्र भगवान के प्ररूपित मार्ग के शरण को प्राप्त हुए ॥ १ ॥ २ ॥

मूल-पुमत्तमागम्म कुमार दोऽवि,
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विसालकित्ती य तहे सुयारो,
रायऽत्थ देवी कमलावई य ॥ ३ ॥

छाया–पुंस्त्वमागम्य कुमारौ द्वापि, पुरोहितस्तस्य यशाश्च पत्नी ।
विशालकीर्त्तिश्च तथेक्षुकारः–राजाऽत्र देवी कमलावती च ॥३॥

अन्वयार्थ–(अत्र) यहां पर (पुँस्त्वम्) पौरुष्य पने (आगम्य) प्राप्त हुए (द्वौ) दोनों (अपि) प्रधानता सूचक (कुमारौ) कुमार (पुरोहितः) 'तीसरा' पुरोहित (च) और 'चौथा' (तस्य) उसकी (पत्नी) औरत (यशाः) यशा नाम वाली (तथा) तैसे ही 'पांचवां' (विशालकीर्त्तिः) विस्तीर्णकीर्त्ति वाला (इक्षुकारः) इक्षुकार नामक (राजा) नरेश (च) और 'छट्ठा' (देवी) राणी (कमलावती) कमलावती नाम की हुई ॥ ३ ॥

भावार्थ–छः पुरुष यथा शक्ति धर्म क्रिया कर एक ही स्वर्ग के एक ही विमान में छः ही देवता हुए थे। वहां वे अपना २ आयुः पूर्ण कर उन छओं में से एक देव यहां इक्षुकार नाम के नगर में इक्षुकार नामक नरेश हुवा। और दूसरा एक देव इसी राजा के कमलावती राणी हुई। तीसरा एक देव इसी नगर में भृगु नामक राज्य पुरोहित हुआ। और चौथा एक देव इसी पुरोहित के यशा नाम वाली औरत हुई। और दो देव राज्य पुरोहित के पुत्र पने आकर हुए ॥ ३ ॥

मूल–जाईजरामच्चुभयाभिभूया,
बहिंविहारामिनिविट्ठचित्ता ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा,
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥ ४ ॥

छाया-जातिजरामृत्युभयाभिभूतौ, बहिर्विहाराभिनिविष्टचित्तौ ।
संसारचक्रस्य विमोक्षणार्थं, दृष्ट्वा तौ कामगुणेषु विरक्तौ ॥४॥

अन्वयार्थ-(**जातिजरामृत्युभयाभिभूतौ**) जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु भय से भयभीत होने वाले (**बहिर्विहाराभिनिविष्टचित्तौ**) संसार से बहारका स्थान में आशक्त चित्तवाले (**तौ**) वे दोनों कुमार (दृष्ट्वा) 'उन साधुको' देख कर (**संसारचक्रस्य**) संसारचक्र को (**विमोक्षणार्थं**) दूरकरने के लिये (**कामगुणेषु**) विषय वासना से (**विरक्तौ**) विरक्त हुवे ॥ ४ ॥

भावार्थ-संसार में जन्म जरामृत्यु आदि भयों से भयभीत होने वाले और संसार से बहार का जो स्थान (मोक्ष) उस स्थान को प्राप्त करने के लिये आसक्त चित्त वाले वे दोनो राज्य पुरोहितके पुत्र सद्गुरु को देख कर संसार के संपूर्ण विषय वासनाओं से विरक्त हुए ॥४॥

मूल-पियपुत्तगा दोन्निवि महाणस्स,
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं,
तहा सुचिण्णं तव संजमं च ॥ ५ ॥

१-पंचमी विभक्ति के स्थान में सप्तमी हुई ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छाया--प्रियपुत्रकौ द्वावपि ब्राह्मणस्य,
स्वकर्मशीलस्य पुरोहितस्य ।
स्मृत्वा पौराणिकीन्तत्र जातिं,
तथा सुचीर्णं तपः संयमं च ॥ ५ ॥

अन्वयार्थ (स्वकर्मशीलस्य) अपने कर्म काण्डों में निपुण (ब्राह्मणस्य) ब्राह्मण (पुरोहितस्य) पुरोहित के (द्वावपि) दोनों ही (प्रियपुत्रकौ) प्रिय पुत्र (तत्र) वहाँ, (पौराणिकीं) पूर्व (जातिं) जन्मको (तथा) तथा प्रकार का (सुचीर्णं) अङ्गिकार किया हुआ (तपः) तपव्रत (च) और (संयमं) संयमको (स्मृत्वा) स्मरण कर ॥ ५ ॥

भावार्थ-अपने क्रिया काण्ड में निपुण ऐसा जो वह पुरोहित ब्राह्मण उसके उन दोनों प्रिय पुत्रों ने जाति स्मरण ज्ञान द्वारा विचार किया कि अपन ने अगले जन्म में किस प्रकार का तपव्रत और संयम अङ्गीकार किया था वह सब उनको भाषित होने पर फिरभी वैसा ही करने के लिये उत्तेजित हुए ॥ ५ ॥

मूल-ते कामभोगेसु असज्जमाणा,
माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा,
तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥

छाया-तौ कामभोगेष्वसंसजतौ, मानुष्यकेषु ये चापि दिव्याः।
मोक्षाभिकांक्षिणावभिजातश्रद्धौ तातमुपागम्येदमुदाहरताम् ॥६॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्वयार्थ (मानुष्यकेषु) मनुष्य सम्बन्धी (ये चापि) जो और भी (दिव्याः) देवता सम्बन्धी (कामभोगेषु) काम भोगोंमें (असंसजतौ) संसर्ग नहीं करते हुए (अभिजात-श्रद्धौ) उत्पन्न हुई है तत्व रुची ऐसे (मौक्षाभिकांक्षिणौ) मोक्षकी इच्छा करने वाले (तौ) वे दोनों पुत्र (तातमुपागम्य) पिता के पास आकर (इदं) इस प्रकार (उदाहरताम) कहते हुए ॥ ६ ॥

भावार्थ-उत्पन्न हुई है तत्व रुची जिनको ऐसे वे दोनों पुत्र मोक्षाभिलाषी मनुष्य सम्बन्धी और देवता सम्बन्धी काम भोगों का संसर्ग नहीं करते हुवे अपने पिता के पास आकर इस प्रकार कहने लगे ॥ ६ ॥

मूल-असासयं दट्ठु इमं विहारं,
बहुअंतरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लभामो,
आमंतयामो चरिस्सामु मोणं ॥ ७ ॥

छाया-अशाश्वतं दृष्ट्वेमं विहारं, बहन्तरायं न च दीर्घमायुः ।
तस्माद्गृहे न रतिं लभावहे, आमंत्रयावहे चरिष्यामो मौनं ॥७॥

अन्वयार्थ-(इमं) यह (विहारं) मनुष्य भव अशाश्वतं) हमेशा का नहीं है 'तदपि' (बहुन्तरायं) बहुत अन्तराए है, (च) और (आयुः) उम्र (दीर्घम्) लम्बी (न) नहीं है 'ऐसा' (दृष्ट्वा) देख कर (तस्मात्) इस कारण से (गृहे) घर में (रतिं)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भृगु चरित्र

। चित्र परिचय के लिये, वन्दनेके लिये नहीं है।

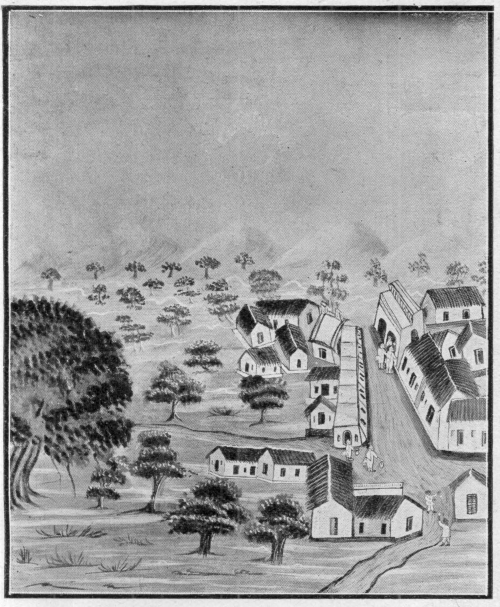

दोनों साधु गाव में प्रवेश हो रहे हैं आगे उन्हे भृगु पुरोहित और उसकी स्त्री दोनो आहार बहरा रहे हैं दो बालक गेंद खेल रहे हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आनन्द को (न) नहीं (लभावहे) प्राप्त कर सके (आमन्त्रयावहे) हम पूछते है आपको (मौनं) दीक्षा (चरिष्यामः) अङ्गीकार करेंगे ॥ ७ ॥

भावार्थ-हे पिता श्री ! यह मनुष्य भव अल्प आयु वाला सदैव रहने का नहीं है, नश्वर है। और इस स्वल्प आयु में भी भोगोपभोग भोगने के लिये खांसी धासी बुखार निद्रा शोक आदि अनेक प्रकार की बाधाएं आ खडी होती हैं। ऐसी अनित्य अवस्था में उस परम शाश्वत सुखों को छोड़ कर गृहस्थाश्रम के पौद्गलिक क्षणिक सुखों में हमें आनन्द नहीं प्राप्त होता है। अत एव हम मुनिवृत्ति ग्रहण करेंगे। आप हमें आज्ञा प्रदान करें ॥ ७ ॥

मूल-अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं,
तवस्स वाघायकरं वयासी।
इमं वयं वेयविओ वयन्ति,
जहा न होई असुयाण लोगो ॥ ८ ॥

छाया-अथ तातंकस्तत्र मुन्योस्तयोस्तपसोव्याघातकरमवादीत्।
इमां वाचं वेदविदो वदन्ति, यथा न भवत्यसुतानं लोकः ॥ ८ ॥

अन्वयार्थ-(अथ) इस के बाद (तातकः) पिता (तत्रः) तहाँ (मुन्योः) 'भाव' मुनि (तयोः) उन्ह के (तपसः) तपसा को (व्याघातकरं) बाधा पहुंचाने को (अवादीत्) कहने लगा (वेदविदः) वेद के जानने वाले (इमां) यह (वाचं) वचन (वदन्ति) कहते (यथा) जैसे (असुतानं) बिना पुत्र (लोकः) परलोक (न) नहीं (भवति) होता है ॥ ८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ-इस प्रकार दोनों पुत्रों के दीक्षा की आज्ञा याचने के बाद इन्हीं के पिता भृगु-पुरोहित उन्ह दोनों भाव मुनियों के तप, संयम को व्याघात पहुंचाने के लिये इस प्रकार कहने लगा कि हे पुत्रों! इस संसार में वेदके जानने वाले तत्त्वज्ञ यह कहते हैं कि बिना सन्तान हुए उसकी सद्गति नहीं होती ॥ ८ ॥

मूल-अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे,
पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं,
आरण्णगा होह मुणी पसत्था ॥ ९ ॥

छाया-अधीत्य वेदान् परिवेष्य विप्रान् पुत्रान् परिष्ठाप्य गृहे जातौ।
भुक्त्वा भोगान् सहस्त्रीभिरारण्यकौ भवतं मुनी प्रशस्तौ ॥ ९ ॥

अन्वयार्थ-(जातौ) हे पुत्रो (वेदान्) वेदों को (अधीत्य) पढ़ कर (विप्रान्) ब्राह्मणों को (परिवेष्य) भोजन करा कर (स्त्रीभिः) स्त्रियों के (सह) साथ (भोगान्) भोगों को (भुक्त्वा) भोग कर (गृहे) घर में (पुत्रान्) पुत्रों को (परिष्ठाप्य) स्थापन कर (आरण्यकौ) वान प्रस्थ (मुनी) साधु (भवतम्) होना (प्रशस्तौ) प्रसंशनीय है ॥ ९ ॥

भावार्थ-हे पुत्रों? हमारा तुम से यह कहना है कि पहले वेद शास्त्र पढ़ो, ब्राह्मणों को खूब खिलाओ पिलाओ, स्त्रियों के साथ भोग भोगो, दो चार पुत्र होने के बाद उन पुत्रों को होशियार कर गृहस्थाश्रम में प्रवर्त कर दे फिर तुम को मुनिवृत्ति ग्रहण करना प्रसंशनीय है ॥ ९ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूल-सोयग्गिणा आयगुणिंधणेणं,
मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।
संतत्तभावं परितप्पमाणं,
लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥ १० ॥
पुरोहियं तं कमसोऽणुणंतं,
निमंतयंतं च सुए धणेणं ।
जहक्कमं कामगुणेहि चेव,
कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥ ११ ॥

छाया-शोकाग्निनात्मगुणेन्धनेन, मोहानिलादधिकप्रज्वलेन ।
संतप्तभावं परितप्यमानं, लालप्यमानं बहुधा बहु च ॥ १० ॥
पुरोहितं तं क्रमशोऽनुनयन्तं, निमंत्रयन्तं च सुतौ धनेन ।
यथाक्रमं कामगुणैश्चैव,कुमारकौ तौ प्रसमीक्ष्य वाक्यं(ऊचतुः)॥ ११

अन्वयार्थ-(आत्मगुणेन्धनेन) आत्मा के गुण रूप इन्धन (मोहानिलात्) मोह रूप हवा (अधिकप्रज्वले) 'द्वारा' प्रज्वलित (शोकाग्निना) शोक रूप अग्नि से (संतप्तभावं) सन्तापभाव हुए है ऐसा (परितप्यमानं) परिताप पाता हुआ (बहुधा) बहुत प्रकार के (बहु) बहुत से (लालप्यमानं) लालच (क्रमशः) क्रम से (सुतौ) पुत्रों को (अनुनयन्तं) जिताता हुआ (यथाक्रमं) यथाक्रम (धनेन) धन कर के (च) और (कामगुणैः) स्त्रीभोग कर के (एव) निश्चयार्थ (निमन्त्र-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यन्तं) निमंत्रण करते हुवे (तं) उस (पुरोहितं) पुरोहित को (प्रसमीक्ष्य) देखकर (तौ) वे दोनों (कुमारकौ) कुमार (वाक्यं) 'उचतुः' कहते हुए ॥ १० ॥ ११ ॥

भावार्थ-दोनों पुत्रों को पिताने बहुत समझाया पर वे दोनों पुत्र अपने प्रण से एक पैरभी पीछे न हटे तब शोक रूप अग्नि, आत्मा के गुण रूप इन्धन, मोह रूप हवा से प्रज्वलित हुआ हृदय जिसका ऐसा वह पुरोहित संताप और परिताप पाता हुआ और भी अपने पुत्रों के वैराग्य पथ से पृथक् करने के लिये नाना प्रकार के बहुत से धन, धान्य, स्त्रीभोग आदि क्रमवार भोगोपभोगों को विनम्र भावोंके साथ निमंत्रण करता हुवा। पिताको अज्ञान से आछादित देखकर वे दोनों कुमार यों बोले ॥ १० ॥ ११ ॥

मूल-वेया अहीया न भवन्ति ताणं,
भुत्ता दिया निंति तमं तमेणं ।
जायाय पुत्ता न हवन्ति ताणं,
को णाम ते अणुमन्नेज्जएयं ॥ १२ ॥

छाया-वेदा आधीता न भवन्ति त्राणं,
भुक्ता द्विजा नयंति तमस्तमसा।
जाताश्च पुत्रा न भवन्ति त्राणं,
को नाम तेऽनुमन्येतैतत् ॥ १२ ॥

अन्वयार्थ-(वेदाः) वेदों को (अधीताः) पढने से ही वेद (त्राणं) शरणभूत (न) नहीं (भवन्ति) होते है (द्विजाः) 'पथ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च्युत' ब्राह्मणों को (भुक्ता) जिमाने से (तमसा) अज्ञान कर के (तमः) अधोगति को (नयंति) प्राप्त होते हैं (च) और (पुत्राः) पुत्र (जाताः) होने से (त्राणं) शरण (न) नहीं (भवन्ति) होते हैं तब (कः) कौन (नाम) ऐसा (ते) तुम्हारे (एतत्) ये 'वाक्य' (अनुमन्येत्) मान सकता है ॥ १२ ॥

भावार्थ-हे पिता श्री ! केवल वेद शास्त्रों (ज्ञानशास्त्रों) को पढने से वेद शरण भूत नहीं होते हैं । क्योंकि केवल पढने मात्र ही से क्या ! वेद पढने के बाद सत्य कर्मों में प्रवर्त्ती करें । उसी के वेद पढना इस भव परभव में शरण भूत हो सकता है । इसी प्रकार श्रीमद्भागवत के ७ वें स्कन्ध के ग्यारहवें अध्याय के २१ वें श्लोक और श्रीमद्गीता के अठारवें अध्यायके ४२ वें श्लोक से विमुख अगुओं को धारण करने वाले, ब्रह्म पथ से पतित, व्यभिचारी, असत्यवादी, अनेक असद्गुणों का भण्डारी, केवल नाम मात्र के ब्राह्मणों को भोजन खिलाने से परलोक में त्राण (शरण) तो दूर रहे पर अज्ञान कर के अन्धकार के स्थानको प्राप्त होते हैं । और न कोई पुत्र परलोक में त्राण शरण हो सकते हैं । तब कौन ऐसा मूर्ख है जो भोगोपभोग के लिये आप के ये वाक्य मानें ॥ १२ ॥

मूल-खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा,
पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया,
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥ १३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छाया-क्षणमात्रसौख्या बहुकालदुःखाः,
प्रकामदुःखा अनिकामसौख्याः ।
संसारमोक्षस्य विपक्षीभूता,
खानिरनर्थानां तु कामभोगाः ॥ १३ ॥

अन्वयार्थ-(**कामभोगाः**) काम भोग (**तु**) पद पूर्णार्थ (**क्षणमात्रसौख्याः**) क्षणिक सुख वाले (**बहुकालदुःखा**) बहुकाल तक दुःख देने वाले हैं (**प्रकामदुःखाः**) 'भोगों में' उत्कृष्ट दुःख है (**अनिकामसौख्याः**) किंचिन्मात्र सुख (**संसारमोक्षस्य**) संसार से निवर्तन होने को (**विपक्षीभूताः**) 'ये भोग' वैरी के समान (**अनर्थानां**) अनर्थों की (**खानिः**) खदान है ॥ १३ ॥

भावार्थ-हे पिता श्री! ये काम भोग क्षण मात्र के सुख देने वाले हैं। फिर उन के परिणाम अन्त में बहुत ही दुखदायी होते हैं। इन में किसी प्रकार का सुख न समझें, जैसे कहां तो पर्वत के समान दुःख और कहां बिचारा कंकर के समान पौद्गलिक सुख हैं। हम तो हे पिता ऐसे सुखों पर न रीझेंगे। क्योंकि वह थोड़ा सा सुख भी सम्पूर्ण मोक्ष के सुखों का वैरी है। और संसार में जितने भी परिभ्रमण करने के कारण हैं वे सभी इसी काम भोग रूप खान ही में से निकलते हैं ॥ १३ ॥

मूल-परिव्वयंते अणियत्तकामे,
अहो य राओ परितप्पमाणे ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे,
पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥ १४ ॥

छाया--परिव्रजन्ननिवृत्तकामोऽहनि च रात्रौ परितप्यमानः ।
अन्नप्रमत्तो धनमेषयन्, प्राप्नोति मृत्युं पुरुषो जरां च ॥ १४ ॥

अन्वयार्थ-(अन्नप्रमत्त) भोजन की प्राप्ति में आशक्त, (धनम्) धन को, (एषयन्) ढूंढने के लिये, (परिव्रजन्) परिभ्रमण करता हुआ, (अहनि) दिन, (च और (रात्रौ) रात्रि भर, (परितप्यमानः) चिन्ता ग्रसित, (पुरुषः) मनुष्य, (अनिवृत्तकामः) अतृप्त इच्छा वाला, जरां) अवस्था को 'प्राप्त हो कर' (च) और, (मृत्युं) मृत्यु को, (प्राप्नोति) प्राप्त हो जाता है ॥ १४ ॥

भावार्थ-हे पिता श्री ! जो भोगों से दूर नहीं हुआ है वह अतृप्त इच्छावाला मनुष्य विषय वासना और खान पान धन आदि इकट्ठे करने के लिये रात दिन चिन्ता में पड़ा हुआ इधर उधर भटकता फिरता है यों भटकते २ वृद्धावस्थाको प्राप्त होकर आखिर मृत्यु को प्राप्त होजाता है ॥ १४ ॥

मूल-इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि,
इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
तं एवमेयं लालप्पमाणं,
हरा हरंति त्ति कहं पमाए ॥ १५ ॥

छाया-इदञ्च मेऽस्तीदञ्च नास्तीदञ्च मे कृत्यमिदमकृत्यम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तमेवमेव लालप्यमानं, हरा हरन्तीति कथं प्रमादः ॥ १५ ॥

(इदम्) यह 'स्वर्ण' (मे) मेरे (अस्ति) है (च) और (इदम्) यह 'हीरे पन्ने' (न) नहीं (अस्ति) है (च) और (इदम्) यह 'मकान' (मे) मेरेको (कृत्यम्) करने योग्य (च) और (इदम्) यह 'व्यापार' (अकृत्यम्) नहीं करने योग्य है (एवमेव) इस प्रकार (लालप्यमानं) 'दिल' ललचाता है (हराः) रात 'दिन रूप समयका' चौर (तं) उस पुरुषको (हरन्ति) 'जन्म जन्मान्तरको' प्राप्त करता है (इति) संपूर्णार्थ (प्रमादः) 'तब' आलस्य (कथं) क्यों 'किया जावे' ॥१५॥

हे पिता श्री! इस संसार में मनुष्य मात्र इस ध्यान में बैठे हुए हैं कि इतना तो मेरे पास है, इतने धनकी और आवश्यकता है। मेरे अमुक व्यापारतो करने योग्य है। और अमुक व्यापार नहीं करने योग्य है। इसी फिक्र में रात दिन लगा रहता है, पर यह नहीं जानता है कि रात दिन समय रूप चौर जन्म जन्मान्तरों को प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करता है। ऐसी अवस्था में हमें धर्म कार्य में प्रमाद करना ठीक नहीं है ॥ १५ ॥

मूल-धणं पभूयं सह इत्थियाहिं,
सयणा तहा कामगुणा पगामा।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो,
तं सव्वसाहीणमिहेव तुब्भं ॥ १६ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छाया-धनं प्रभूतं सह स्त्रीभिः स्वजनास्तथा कामगुणाः प्रकामाः।
तपःकृते तप्यते यस्य लोकस्तत्सर्वंस्वाधीनमिहैव युवयोः ॥१६॥

अन्वयार्थ-(प्रभूतं) बहुत (धन) द्रव्य (सह स्त्रीभिः) साथ स्त्री (स्वजनाः) परिवार (तथा) तैसे ही (प्रकामाः) खूब (कामगुणाः) काम भोग (तपः) कष्ट (कृते) इत्यादिको प्राप्त करने के निमित्त (यस्य) जिसके (लोकः) मनुष्य (तप्यते) परिश्रम उठाते हैं (तत्) वे (सर्वम्) सब (युवयोः) तुमको (इहैव) यहाँ पर ही (स्वाधीनम्) स्वाधीन है ॥ १६ ॥

भावार्थ-हे पुत्रों ! संसार में तो धन, स्त्री, परिवार, भोगोपभोग आदिको प्राप्त करने के लिये मनुष्य अनेक प्रकारका कष्ट, और भाँति २ का परिश्रम उठाते हैं पर तुम्हें तो बिना ही परिश्रम किये हुए यहाँ सब सुख प्राप्त हो रहे हैं। फिर तुम इन सुखों को भोगने के लिये शिर क्यों हिला रहे हो ॥ १६ ॥

मूल-धणेण किं धम्मधुराहिगारे,
सयणेण वा कामगुणेहिं चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी,
बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥ १७॥

छाया-धनेन किं धर्मधुराधिकारे,
स्वजनेन वा कामगुणैश्चैव ।
श्रमणौ भविष्यावोगुणौघधारिणौ,
बहिर्विहारावभिगम्य भिक्षाम् ॥ १७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्वयार्थ-(धर्म्मधुराधिकारे) धर्म है अग्रसर जिसके ऐसे अधिकार में उसके (धनेन) धन कर के (किं) क्या (वा) अथवा (स्वजनेन) परिवार कर के 'क्या' (च) और (कामगुणैः) कामभोगों कर के (एव) ही 'क्या' (गुणौघधारिणौ) गुण समूहको धारण करने वाले (श्रमणौ) साधु (भविष्यावः) होंगे (भिक्षाम्) भिक्षाको (अभिगम्य) 'निर्दोष, जानकर (बहिर्विहारौ) 'ग्राम से, बहार गमन करेंगे ॥ १७ ॥

हे पिता श्री ! जिस के हृदय में धर्म प्रविष्ट कर गया है, उसे न धन, न स्वजन, न काम भोगों की ही आवश्यकता है और न वह उनकी प्राप्ति के लिये इच्छा करता है। इसी प्रकार हमको भी जो आप कह रहे हैं उन में से किसी भी बातकी आवश्यकता नहीं है। हाँ, जिसे चाह रहे हैं उसी लिये शान्त, दान्त गुणों को धारण कर अप्रतिबद्ध पक्षिक जैसे भूमण्डल में विचरेंगे। और निर्दोष आहार पानी को जान कर उसे भिक्षा रूप में ग्रहण करते हुये संयम का निर्वाह करेंगे ॥ १७ ॥

मूल-जहा य अग्गी अरणीअसंतो,
खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु।
एमेव जाया सरीरंसि सत्ता,
समुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥ १८ ॥

छाया-यथा चाग्निः अरणितोऽसन् क्षीरे घृतं तैलमथ तिलेषु।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवमेव जातौ शरीरे सत्ता, सम्मूर्च्छति नश्यति नावतिष्ठते ॥१८॥

अन्वयार्थ-(**जातौ**) हे पुत्रों ! (**यथा**) जैसे (**अग्निः**) आग (**अरणितः**) अग्निकाष्ठमथन से (**असन्**) नहीं होने पर भी (**सम्मूर्च्छति**) उत्पन्न होती है (**क्षीरे**) दुध में (**घृतं**) घी (**अथ**) शब्द की भिन्नता (**तिलेषु**) तिलों में (**तैलं**) तेल ' यों ही उत्पन्न होजाते हैं ' (**एवमेव**) ऐसे ही (**शरीरे**) शरीर में (**सत्ता**) जीव ' उत्पन्न हो जाते हैं ' (**नश्यति**) ' शरीर ' नाश होता है ' उस समय जीव भी ' (**न**) नहीं (**अवतिष्ठते**) ठहरता है ॥ १८ ॥

भावार्थ-हे पुत्रों ! जैसे अरणि के काष्ट मथन से अग्नि, दुध में घी, तिलों में तेल यों ही उत्पन्न हो जाते हैं । वास्तविक रूप से उन में अग्नि, दुग्ध, घी, नहीं हैं । ऐसे ही इस शरीर में भी यह जीव जो तुम कहते हो वह यों ही पांच तत्वों का संयोग मिलने पर उत्पन्न हो जाता है । जब पाँच तत्त्व (शरीर) नष्ट होते हैं तब जीव (आत्मा) भी समूल नष्ट हो जाता है न स्वर्ग है, न नर्क है, न मोक्ष, केवल यह तो इन्द्र-जाल है । किस के लिये तुम व्यर्थ ही साधु बनकर इस शरीरको कष्ट पहुँचाने का सहास कर रहे हो ॥ १८ ॥

मूल-नो इंदियगेज्झ अमुत्तभावा,
अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अज्झत्थहेउं निययऽस्स बंधो,
संसारहेउं च वयंति बंधं ॥ १६ ॥

छाया-नेन्द्रियग्राह्योऽमूर्तभावादमूर्तभावादपि च भवति नित्य ।
अध्यात्महेतुं नियतोऽस्य बन्धः,संसारहेतुं च वदन्ति बन्धम् ॥१६॥

अन्वयार्थ-(**अमूर्तभावात्**) ' आत्मा का ' अरूप भाव होने से (**इन्द्रियग्राह्यः**) इन्द्रियों द्वारा ग्रहण (**न**) नहीं हो सकता (**च**) और (**अपि**) भी (**अमूर्त भावात्**) अरूप होने से (**नित्यः**) हमेशाका (**भवति**) होता है (**अध्यात्महेतुं**) आन्तरिक दुर्गुणों का हेतु (**अस्य**) उसके (**नियतः**) निश्चय (**बन्धः**) बन्धन है (**च**) और (**संसारहेतुं**) संसार में ' परिभ्रमण रूप ' हेतु (**बन्धम्**) बन्धन (**वदन्ति**) ' तत्त्वज्ञ ' कहते हैं ॥ १६ ॥

भावार्थ-हे पिता श्री ! शरीर नाश होने पर आत्मा भी नाश हो जाती है यह बात आपकी तत्त्वज्ञ तो नहीं मान सकते हैं । क्या यह अरूपी आत्मा इन्द्रियों द्वारा पकड़ी जाती है ! कभी भी नहीं, अमूर्तिमान आत्मा कभी नाश नहीं होती । यदि तुम कहोगे कि इस रूपी शरीरने अरूपी आत्मा का बन्धन कैसे कर रखा है । उत्तर-जैसे आकाश अरूपी है पर घट के आश्रित रहे हुवे आकाश का बन्धन हो ही जाता है उसे घटाकाश कहेंगे । परन्तु घटका नाश होने पर आकाशका नाश कभी नहीं होता है । इसी तरह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से शरीर का नाश होने पर आत्मा का नाश नहीं होता है वह तो नित्य, अजर, अमर है। आन्तरिक दुर्गुणों ने आत्मा को बन्धन में कर रखी है घट आकाशवत्। और ये ही दुर्गुण आत्मा के लिये संसार का हेतु बन रहे हैं। जब ये दुर्गुण आत्मा से दूर होजायगें तब वह आत्मा परम सुख में प्राप्त होजायगी। अत एव स्वर्ग है, नर्क है, मोक्ष है, सब कुछ है जो जिसकी इच्छा होगा वह प्राप्त करेगा ॥ १६ ॥

मूल–जहा वयं धम्ममजाणमाणा,
पावं पुरा कम्ममकासि मोहा।
उरुब्भमाणा परिरक्खियंता,
तं नेव भुज्जोऽवि समायरामो ॥ २० ॥

छाया–यथा वयं धर्म्ममजानानाः पापं पुरा कर्म्म अकार्ष्म मोहात्। अवरुध्यमानाः परिरक्ष्यमाणाः, तन्नैव भूयोऽपि समाचरामः॥ २०॥

अन्वयार्थ–(**यथा**) जैसे (**धर्म्मम्**) धर्मको (**अजानानाः**) नहीं जानते हुए (**वयं**) हम (**पुरा**) पहिले (**पापं**) पाप (**कर्म**) क्रिया (**मोहात्**) मोहसे (**अकार्ष्म**) किया (**परिरक्ष्यमाणाः**) चौतरफ से रक्षा के साथ (**अवरुध्यमानाः**) रोके हुवे हम (**तत्**) वह पाप (**भूयोऽपि**) फिरभी (**नैव**) नहीं (**समाचरामः**) करेंगे ॥ २० ॥

हे पिता श्री ! हम धर्म नहीं जानते थे तब पहिले अज्ञात अवस्था में मोहके वश अनेक पाप किये थे। और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आपने भी कई प्रकार का झूठा ढकोसला दिखाकर अभी तक संसार में रक्षाके साथ फुसला रखे थे पर अब हम उन दुष्कृतों को पुनरपि जान बुझ कर नहीं करेंगे। जो आप हमे समझा रहे हैं यह आपका स्वार्थ है ॥ २० ॥

मूल-अब्भाहयंमि लोयंम्मि, सव्वउ परिवारिए।
अमोहाहिं पडंतीहिं, गिहंसि न रइं लभे ॥२१॥

छाया--अभ्याहते लोके, सर्वासु परिवारिते
अमोघाभिः पतंतीभिः, गृहे न रतिं लभावहे ॥२१॥

अन्वयार्थ-(लोके) लोक (अभ्याहते) पीड़ित (सर्वासु) सर्व ' दिशा ' (परिवारिते) विंटा हुआ (अमोघाभिः) अविश्रामधारा (पतंतीभिः) गिरती हुई (गृहे) घर में (रतिं) आनन्द (न) नहीं (लभावहे) प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

भावार्थ-हे पिता ! इस संसार में प्राणिमात्र पीड़ित और सर्व दिशाओं में परिवेष्टित हो रहे हैं। सदैव अमोघ धारा पड़ रही है। इस लिये हम ऐसे संसार में आनन्द कैसे पा सकते हैं ॥२१॥

मूल-केण अब्भाहओ लोओ, केण वा परिवारिओ।
का वा अमोहा वुत्ता, जाया चिंतावरो हुमि ॥२२॥

छाया-केनाभ्याहतोलोकः, केन वा परिवारितः।
का वाऽमोघोक्ता, जातौ चिन्तापरो भवामि ॥२२॥

अन्वयार्थ-(जातौ) हे पुत्रों ! (केन) किस तरह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(लोकः) जन (अभ्याहतः) पीड़ित (वा) अथवा (केन) किस तरह (परिवारितः) परिवेष्टित है (वा) अथवा (का) कौनसी (अमोघा) अविश्राम धारा (उक्ता) कही (चिन्तापरः) चिन्ता ग्रसित (भवामि) होता हूं ॥२२॥

भावार्थ–हे पुत्रों ! किस प्रकार इस संसार में प्राणिमात्र पीड़ित और वेष्टित हो रहे हैं। और कौनसी अमोघ धारा पड़ रही है । तुमारी बातें सुन कर चिन्ताग्रसित हो रहा हूं। इस का स्पष्टीकरण किये बिना मेरे चित्त को शान्ति नहीं होगा ॥२२॥

मूल–मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ ।
अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय वियाणह ॥२३॥

छाया–मृत्युनाभ्याहतो लोको, जरया परिवारितः ।
अमोघा रजनी उक्ता, एवं तात विजानीयात् ॥२३॥

अन्वयार्थ–(तात) हे पिता ! (लोकः) प्राणी (मृत्युना) मृत्यु से (अभ्याहतः) पीड़ित और (जरया) वृद्धावस्था कर के (परिवारितः) घिरे हुए हैं। (रजनी) रात 'उपलक्षण से दिन रूप' (अमोहा) अविरल धारा ' पड़ रही है ऐसा तत्वज्ञों ने' (उक्ता) कहा है (एवं) इस प्रकार (विजानीयात्) समझो ॥ २३ ॥

भावार्थ–हे पिता ! इस संसार में प्राणिमात्र मृत्यु के दुःख से पीड़ित और वृद्धा अवस्था कर के घिरे हुए हैं सदैव रात दिन समय रूप विश्राम रहित धारा पड़ रही है इस प्रकार आप अपने हृदय में प्रश्नों का उत्तर समझ लीजियेगा ॥ २३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूल–जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जन्ति राइओ ॥२४॥

छाया–या या व्रजति रजनी, न सा प्रतिनिवर्तते।
अधर्मं कुर्वतोस्तस्यह्य, यान्ति रात्रयः ॥ २४ ॥

अन्वयार्थ–(**या या**) जो जो (**रजनी**) रात्रि (**व्रजति**) जाती है (**सा**) वह (**न**) नहीं (**प्रतिनिवर्तते**) पीछी लौट कर नहीं आती है (**अधर्मं**) पाप को (**कुर्वतस्तस्य**) करने वाले की (**हि**) निश्चय (**रात्रयः**) रात्रि (**अफला**) निष्फल (**यान्ति**) जा रही है ॥ २४ ॥

हे पिता श्री ! जो जो रात्रि और दिन जा रहे हैं। वे पीछे लौट कर कभी नहीं आने के हैं। ऐसा अपूर्व समय पाकर मनुष्य पाप कर रहे हैं उन के लिये वह समय निष्फल सा जा रहा है ॥ २४ ॥

मूल–जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जन्ति राइओ॥२५॥

भाया–या या व्रजति रजनी, न सा प्रतिनिवर्तते।
धर्म्मञ्च कुर्वतस्तस्य सफला यान्ति रात्रयः ॥ २५ ॥

(**या या**) जो जो (**रजनी**) रात्री (**व्रजति**) जाती है (**सा**) वह (**न**) नहीं (**प्रतिनिवर्तते**) पीछी लौट कर आती है 'ऐसा समझ कर' (**धर्म्मं**) धर्मको (**च**) पद पूर्णार्थ (**कुर्वतस्तस्य**) करने वाले ही (**रात्रयः**) रात्रि (**सफला**) सफल (**यान्ति**) जा रही है ॥ २५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भृगु चरित्र

। चित्र परिचय के लिये, वंदने के लिये नहीं है ।

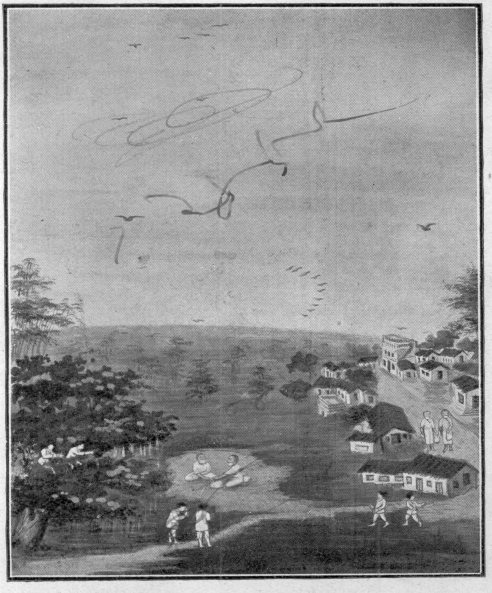

दोनों लड़के साधुओं को देखकर भयभीत होते हुए गाँव से जंगलकी ओर भागें जा रहे हैं। आगे वें दोनों वट वृक्ष पर चढ कर पत्ते की आड़ में छिप रहे हैं। मुनि आहार पानी करने को बैठे त्यों ही दोनों लड़के वट से उतर कर नमस्कार कर रहे हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ-हे पिता श्री ! रात दिन रूप जो अपूर्व समय जा रहा है, वह लौट कर कभी भी पीछा आनेका नहीं है। ऐसा समझ कर ज्ञानी जन धार्मिक कार्योंमें समय बिता रहे है उन का जन्म व समय सार्थक है । अत एव ऐसा अपूर्व समय जान कर अब हम हमारा समय निष्फल नहीं जाने देंगे. आप हमे धर्म करते हुवे न रोकें ॥ २५ ॥

मूल-एगओ संवसित्ता णं, दुहओ सम्मतसंजुया ।
पच्छा जाया गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥

छाया-एकतः समुष्य द्वये सम्यक्त्वसंयुताः ।
पश्चाज्जातौ गमिष्यामो, भिक्षमाणाः कुले कुले ॥२६॥

अन्वयार्थ-(**जातौ**) हे पुत्रों ! (**द्वये**). तुम दोनों हम दोनों (**एकतः**) एक जगह (**समुष्यः**) निवास कर (**सम्यक्त्वसंयुताः**) सम्यक्त्व सहित होवे (**पश्चात्**) फिर (**कुले कुले**) घर घर में (**भिक्षमाणाः**) भिक्षा करते हुए (**गमिष्यामः**) पर्यटन करेंगे ॥ २६ ॥

भावार्थ-हे पुत्रों ! तुम दोनों भ्राताओं और हम दोनों तुम्हारे मात पिताओं एवं चारों ही अभी हाल एक ही स्थान में सम्यक्त्व सहित गृहस्थावास में निवास कर यथा-शक्ति अपने धर्मोपार्जन करें । फिर वृद्धावस्था आने पर मुनिव्रति ग्रहण कर उच्च कुलोंमें निर्दोष आहार पानी की भिक्षा करते हुए देशाटन करेंगे ॥ २६ ॥

मूल-जस्सऽत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वत्थि पलायणं ।
जो जाणइ न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया ॥२७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छाया-यस्यास्ति मृत्युना सख्यं,
यस्य चास्ति पलायनम् ।
यो जानीते न मरिष्यामि,
स एव (खलु) कांक्षते श्वः स्यात् ॥२७॥

अन्वयार्थ-(यस्य) जिसके (मृत्युना) मृत्यु के साथ (सख्यम्) मित्रता (अस्ति) है (च) और (यस्य) जिसके 'मृत्युसे' (पलायनं) भागने का साहस (अस्ति) है (यो) जो (जानाति) जानता है 'कि मैं' (न) नहीं (मरिष्यामि) मरूंगा (स) वह (एव) ही (श्वः) आगामी दिन 'जीने की' (स्यात्) कदाचित् (कांक्षते) इच्छा करता है ॥ २७ ॥

भावार्थ-हे पिता श्री ! आप कहते हैं कि वृद्धावस्था होने पर दीक्षा लेंगे इसका निश्चय किस को है । वृद्धावस्था न होने पहिले ही मृत्यु प्राप्त हो जाय तो इसकी कौन जान सकता है हाँ जिसको इस प्रकार का ज्ञान है कि मैं अमुक दिन ही मरूँगा और दिन नहीं । अथवा जिसके यमराज के साथ मित्रता हो । यद्वा यमराज से बच कर भगजाने का सहास हो और जो जानता हो कि मैं मरूँगा ही नहीं वही शूर वीर मनुष्य धर्म करने में भले ही परहेज करता होगा । हमारी न तो यमराज के साथ मित्रता है और न हमारे में उस से भगजाने की वीरता है । हम नहीं मरेंगे ऐसा हमे विश्वास भी नहीं तब आप के वचन कैसे मानेंगे ॥ २७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूल–अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो,
जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो।
अणागयं नेव य अत्थि किंची,
सद्धाखमं णो विणइत्तु रागं ॥ २८ ॥

छाया–अद्यैव धर्म्मं प्रतिपद्यामहे,
यं प्रपन्ना न पुनर्भविष्यामः।
अनागतं नैव चास्ति किञ्चित्,
श्रद्धाक्षमं नो विनीय रागम् ॥२८॥

अन्वयार्थ–(किंचित्) किंचिन्मात्र ' भी विषयादि सुख ऐसे ' (नैव) नहीं (अस्ति) है कि मुझे, (अनागतम्) गये काल में प्राप्त नहीं हुए हो अतः (रागं) रागको (विनीय) दूरकर (अद्यैव) आजही (नो) हम (श्रद्धाक्षमं) श्रद्धापूर्वक (धर्म्मं) धर्म्म को (प्रतिपद्यामहे) अङ्गीकार करेंगे (यं) जिस (प्रपन्नाः) आश्रित (न) नहीं (पुनः) फिर (भविष्यामः) जन्मान्तरों में, होंगे ॥ २८ ॥

भावार्थ-हे पिता! इस संसार में विषयादि सुख ऐसा कोई भी नहीं है जो कि हमे गये काल में नहीं मिला हो। अत एव राग भाव को दूर कर आज ही हम श्रद्धापूर्वक धर्म अङ्गीकार करेंगे। जिस के धारण करने से संसार में हमारा फिर से जन्म नहीं होगा ॥ २८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस प्रकार पिता पुत्र के परस्पर वार्तालाप होने पर पिताने जान लिया कि ये अब संसार में रहने के नहीं हैं। जितने भी मैं ने इनको रोकने के प्रयत्न किये वे सब योंही गये। जब ये दोनों पुत्र संसार परित्याग कर रहे हैं तो मेरा संसार में रहना अयोग्य है। ऐसा विचार कर भृगु पुरोहित अपनी प्रियपत्नि से यों कहने लगा॥

मूल–पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो,
वासिट्ठि भिक्खायरियाइ कालो।
सहाहि रुक्खो लहई समाहिं,
छिन्नाहिं साहाहि तमेव खाणुं॥ २६॥

छाया–प्रहीणपुत्रस्य खलु नास्ति वासो,
वाशिष्टि भिक्षाचर्यायाः कालः।
शाखाभिर्वृक्षो लभते समाधिञ्छिन्नाभिः
शाखाभिः स एव स्थाणुः॥ २६॥

अन्वयार्थ–(**वाशिष्टि**) हे वशिष्ठ गोत्रवाली (**प्रहीणपुत्रस्य**) विना पुत्र वालेको (**खलु**) निश्चय (**वासः**) 'संसार में' निवास करना 'योग्य' (**न**) नहीं (**अस्ति**) है 'उसका तो' (**भिक्षाचर्यायाः**) भिक्षावृत्ति का (**कालः**) समय है 'जैसे' (**वृक्षः**) पेड़ (**शाखाभिः**) शाखाओं कर के (**समाधिं**) आनन्द को (**लभते**) प्राप्त होता है (**शाखाभिः**) शाखाओं कर के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(छिन्नाभिः) रहित (स एव) वही वृक्ष (स्थाणुः) स्तम्भ ' के समान है ' ॥२९॥

भावार्थ-हे वशिष्ट गोत्र में उत्पन्न होने वाली प्राणवल्लभा ! दोनों पुत्रों को मैं ने बहुत समझाया पर वे मेरे कथन को नहीं मानते हुए संसार का परित्याग कर रहे हैं। इस लिये बिना पुत्र मेरा भी संसार में रहना योग्य नहीं है । क्योंकि अभोगी दोनों पुत्र तो दीक्षा ले रहे हैं। और मैं फिर भी विषयों की लालसा में बैठा रहूं यह कभी होने का नहीं. मेरा भी भिक्षावृत्ति करने का समय है। जैसे वृक्ष शाखाओं से आनन्द को प्राप्त होता है। और वही वृक्ष शाखा करके रहित सुशोभित नहीं होता हुआ थंभे के समान दिखाई देता है ॥ २९ ॥

मूल-पंखाविहूणो व जहेव पक्खी,
भिच्चाविहूणो व रणे नरिन्दो ।
विवन्नसारो वणिउव्व पोए,
पहीणपुत्तोमि तहा अहंपि ॥ ३० ॥

छाया-पक्षविहीनो वा यथैव पक्षी,
भृत्यविहीनो वा रणे नरेन्द्रः ।
विपन्नसारोवणिग् वा पोते,
प्रहीणपुत्रोऽस्मि तथाऽहमपि ॥३०॥

अन्वयार्थ-(यथैव) जैसे (पक्षविहीनः) पर विना (पक्षी) पक्षी जानवर (वा) अथवा (रणे) संग्राम में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(भृत्यविहीनः) नोकर बिना (नरेन्द्रः) राजा (वा) अथवा (पोते) जहाज में (विपन्नसारः) द्रव्य बिना (वणिग्) व्यापारी 'असमर्थ' है (वा) अथवा (तथा) तैसे ही (प्रहीणपुत्रः) पुत्र बिना (अहमपि) मैं भी (अस्मि) हूं ॥ ३० ॥

भावार्थ-हे पुत्र जननि ! जैसे इस संसार में पर बिना पक्षी उड़ने को अशक्त है। संग्राम में सेना बिना बैरी को जीतने में राजा असमर्थ है। और जहाज में द्रव्य रहित व्यापारी वर्ग असमर्थ है। ऐसे ही बिना पुत्र संसार में रहने के लिये मैं भी असमर्थ हूं ॥ ३० ॥

मूल-सुसंभिया कामगुणा इमे ते,
संपिंडिया अग्गरसा पभूया ।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं,
पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥ ३१ ॥

छाया-सुसंभृताः कामगुणा इमे ते,
संपिण्डिता अग्ररसाः प्रभूताः ।
भुंजावस्तस्मात्कामगुणं प्रकामं,
पश्चाद्गमिष्यावः प्रधानमार्गम् ॥३१॥

अन्वयार्थ-(इमे) ये (संपिण्डिताः) इकट्ठे किये हुए (सुसंभृताः) भले प्रकार के (अग्ररसाः) प्रधान रसवाले

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(प्रभूताः) बहुत से (ते) तुम्हारे (कामगुणाः) कामभोगों की 'सामग्री' हैं (तस्मात्) इस लिये (प्रकामं) बहुत (कामगुणं) काम भोगों को (भुंजावः) भोगें (पश्चात्) फिर (प्रधानमार्गम्) दीक्षा मार्ग को (गमिष्यावः) जावेंगे ॥ ३१ ॥

भावार्थ-हे प्राणपते ! दोनों पुत्र संसार त्याग रहे हैं तो त्यागने दो, आप ने बहुत समझाया पर वे नहीं मानते हैं तो उनकी इच्छा, जिसका अब आप क्या करें। दुनिया में कहते भी हैं कि 'जब दाखे पकन लगी, तो काग कण्ठहुआ रोग'। खैर जाने दो। हे नाथ ! आप के तो यह प्रचूर काम भोग सुसज्जित ऋतु अनुकूल मनोहर इकट्ठे हो रहे हैं। भोगोपभोग भोगने के लिये एक भी ऐसा साधन न रहा है, जो कि आप के पास न हो। अवस्था भी अभी हाल है अत एव अभी तो सांसारिक सुखों का अपन दोनों अनुभव करें। फिर वृद्धावस्था होने पर संयम मार्ग ग्रहण कर लेंगे ॥ ३१ ॥

मूल-भूत्ता रसा भोई ! जहाइ ऐ वओ,
न जीवियट्ठा पजहामि भोए।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं,
संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥ ३२ ॥

छाया-भुक्ता रसा भोगिनि जहाति नोवयोन,
जीवितार्थं प्रजहामि भोगान् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाभमलाभञ्च सुखञ्च दुःखं,
संत्यच्यमाणश्चरिष्यामि मौनम् ॥ ३२ ॥

अन्वयार्थ (भोगिनि) हे भोगेच्छुका (रसाः) भोगों को (भुक्ताः) भोग लिये 'इन को नहीं छोड़ेंगे तो' (वयः) अवस्था (नः) मुझ को (जहाति) त्याग जायगा (जीवितार्थं) 'स्वर्ग में विशेष' जिनके लिये (भोगान्) भोगों को (न) नहीं (प्रजहामि) त्यागता हूं (लाभं) प्राप्ति (च) और (अलाभम्) अप्राप्ति (च) और (सुखम्) सुख (दुःखम्) दुखको (संत्यच्यमाणः) समभाव से देखता हुआ (मौनम्) साधुवृत्तिको (चरिष्यामि) प्राप्त करूंगा ॥३२॥

भावार्थ-हे भोगेच्छुका प्राणप्रिये ! संसार के पौद्गलिक सुखों का अनुभव अच्छी तरह से मैं ने कर लिया है। यदि मैं इन भोगों को नहीं छोड़ूंगा तो यौवन अवस्था मुझ को परित्याग कर जावगा। इस लिये पहले ही से भोगों का परित्याग करना श्रेष्ठ है। दांत गिरने पर इंचु चूसने का त्याग करना अज्ञानता है। और ऐसा भी मत समझना कि उपलब्ध भोगोपभोग से अधिक भोगों की प्राप्ति के लिये संसार छोड़ रहा हूं। मैं तो केवल आत्मिक सुखों के लिये ही संसार परित्याग कर रहा हूँ। मुझे स्वर्गादि की प्राप्ति अप्राप्ति पौद्गलिक सुख दुःख से कोई प्रयोजन नहीं है। सम भाव से देखता हुआ साधुवृत्ति प्राप्त करूंगा ॥ ३२ ॥

मूल-मा हू तुमं सोयरियाण संभरे,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जुण्णो व हंसो पडिसोयगामी ।
भुंजाहि भोगाइं मए समाणं;
दुक्खं खु भिक्खायरिरा विहारो ॥३३॥

छाया—मा खलु त्वं सौदर्याणामस्मार्षी,
जीर्ण इव हंसः प्रतिस्रोतोगामी ।
भुंक्ष्व भोगान् मया समं,
दुःखं खलु भिक्षाचर्या विहारो ॥ ३३ ॥

अन्वयार्थ—(**प्रतिस्रोतोगामी**) प्रतिकूल स्रोतको जानेवाला (**जीर्णः**) पुराने (**हंस**) हंस (**एव**) जैसे (**त्वम्**) तुम (**सौदर्याणाम्**) एक उदरसे उत्पन्न होने वाले भ्राताओं का (**मा**) कहीं (**खलु**) निश्चय (**अस्मार्षी**) स्मरण करोगे ' इस लिये (**मया**) मेरे (**समं**) साथ (**भोगान्**) भोगों को (**भुंक्ष्व**) भोगो (**भिक्षाचर्याः**) भिक्षा वृत्तिका (**विहारः**) गमन (**दुःखम्**) दुःखमयी (**खलु**) निश्चय है ॥ ३३ ॥

भावार्थ—हे प्राणेश्वर ! दीक्षा लेने के बाद कुटुम्बियों के भोगों की तरफ तुमारा कहीं ध्यान तो आकर्षित न होजाय ! जैसे नदी के किनारे पर हँसों के टोलों में से एक वृद्ध हँस अपनी सहचारिणी व कुटुम्बियों की बात पर तनिक भी ध्यान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहीं देकर पहले किनारे होने के लिये नदी के प्रतिकूल प्रवाह में पड़गया । जब मध्यभाग में उसे कष्ट पहुँचा तब उसने अपनी सहचारिणी व कुटुम्बियों को याद किये कि मेरी सहचारिणी ने मुझे बहुत रोका था पर मैं ने नहीं माना। ऐसे ही हे पतिराज तुम भी दीक्षा रूप प्रवाह में याद करते हुवे फिर पश्चाताप करोगे कि अरे मेरी स्त्री ने मुझे संयम लेते बहुत रोका था । परन्तु मैंने उसका कथन नहीं माना । ऐसी अवस्था में वहाँ आप न धर्मके रहोगे, न कर्म के। साधुवृत्ति सहल नहीं है महान कठिन है । इस से तो यह अच्छा है कि, संसार में रहकर सुख भोगो । इस के सिवाय और क्या है ॥ ३३ ॥

मूल—जहा य भोई तणुयं भुयंगो,
निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।
एमेए जाया पयहंति भोए,
तेऽहं कहं नाणुगमिस्समेको ॥ ३४ ॥

छाया—यथा च भोगिनि ! तनुजां भुजंगमो ।
निर्मोचनीं हित्वा पर्येति मुक्तः ।
एवमेतौ जातौ प्रजहीतो भोगान् ।
तेऽहं कथं नानुगमिष्याम्येकः ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थ—(भोगिनि) हे भोगेच्छका ! (च) और (यथा) जैसे (भुजंगमः) सर्प (तनुजाम्) शरीर से उत्पन्न होनेवाली (निर्मोचनीं) कंचुकी को (हित्वा)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छोड़कर (मुक्तः) मुक्त होने पर (पर्येति) भागजाता है (एवम्) इस प्रकार (एतौ) ये (ते) तुम्हारे (जातौ) पुत्र (भोगान्) भोगों को (प्रजहीतः) त्यागन कर दिये हैं (एकः) एकेला (अहं) मैं (कथं) कैसे (न) नहीं (अनुगमिष्यामि) साथ जाऊँगा ॥ ३४ ॥

भावार्थ—हे भोगेच्छुका प्रिय पत्नि ! जैसे सर्प, तनसे उत्पन्न होनेवाली कंचुकाको छोड़कर भाग जाता है । पुनः उसी कंचुकाको लेना तो दूर रहा पर उसकी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखता है । ऐसे ही तेरे दोनों पुत्र शरीर से उत्पन्न होने वाले भोगोपभोगों के सुखों का परित्याग कर साधु बनने को जा रहे हैं । तो भी मैं एकेला उनके साथ साधुवृत्ति ग्रहण करने को नहीं जाऊँगा क्या ? ॥ ३४ ॥

मूल—छिंदितु जालं अबलं व रोहिया,
मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
धोरेयसीला तवसा उदारा,
धीराहु भिक्खायरियं चरन्ति ॥ ३५ ॥

छाया—छित्वा जालमबलमिव रोहिता,
मत्स्या यथा कामगुणान् प्रहाय ।
धौरेयशीला तपसा उदारा,
धीरा यस्माद् भिक्षाचर्यां चरन्ति ॥ ३५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्वयार्थ—(**यथा**) जैसे (**रोहिताः**) रोहित जाति का (**मत्स्या**) मच्छ (**अबलम्**) जीर्ण (**जालम्**) जालको (**छित्वा**) नाश करके 'स्वेच्छा मे विचरता है' (**इव**) ऐसे ही (**धौरेयशीलाः**) प्रबल है धर्म क्रिया में स्वभाव जिनका (**तपसा**) तपस्या (**उदाराः**) प्रधान (**धीराः**) बुद्धिमान (**कामगुणान्**) कामभोगों को (**प्रहाय**) त्याग कर (**यस्मात्**) 'मोक्ष' जाने के लिये (**भिक्षाचर्या**) भिक्षा वृत्तिको (**चरन्ति**) प्राप्त करते हैं ॥ ३५ ॥

भावार्थ—हे प्रियपत्नि ! जैसे रोहित जातिका मच्छ जीर्ण जाल को अपनी तीक्ष्ण पूछ से काटकर जल में स्वेच्छा से विचरता है । ऐसे ही प्रधान तप के धारी क्रिया में उत्कृष्ट भाव है जिनके ऐसे वे भोग रूप जाल को नष्ट कर संयम मार्ग को जा रहे हैं ॥ ३५ ॥

मूल—नहेव कुंचा समइक्कमंता,
तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
पलेंति पुत्ता य पई य मज्झं,
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ॥ ३६ ॥

छाया—नभसीव क्रौंचाः समतिक्रामन्त,
स्ततानि जालानि दलयित्वा हंसाः ।
परियन्ति पुत्रौ च पतिश्च मम,
तानहं कथं नानुगमिष्याम्येका ॥ ३६ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्वयार्थ—(नभसि) आकाश में (क्रौचाः) क्रौंच पक्षी (इव) जैसे (समतिक्रामन्तः) एक देश को उलंघन करजाते है (च) और (हंसाः) हंस पक्षी (ततानि) विस्तीर्ण (जालानि) जालको (दलयित्वा) काट कर 'स्वेच्छा से विचरते है ऐसे ही' (पुत्रौ) दोनों पुत्र (च) और (मम) मेरे (पतिः) प्राणनाथ (तान्) उन भोगों को त्यागकर संयम लेने को' (परियान्ति) जा रहे है (एका) एकेली (कथं) कैसे (न) नहीं (अनुगमिष्यामि) साथ जाऊँगा ॥ ३६ ॥

भावार्थ—हे प्राणपते ! आपका सद्बोध मेरे कलेजे को पार कर गया है । अहा हा खूबही अच्छा दृष्टान्त दिया। जैसे क्रौंच पक्षी एक देश को उलंघन कर दूसरे देश को चला जाता है । हंस लम्बी चौडी जालको काटकर स्वेच्छा से विचरता है । ऐसे ही दोनो पुत्र और आप मोह माया रूप जालको काटकर संयम मार्गको प्राप्त करने के लिये जा रहे हैं तब मै एकेली क्या संयम मार्गको प्राप्त करने के लिये साथ नहीं आऊँगा ॥ ३६ ॥

मूल—पुरोहियं तं ससुयं सदारं,
सोच्चाभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुंबसारं विउलुत्तमं तं,
रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥ ३७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छाया—पुरोहितं तं ससुतं सदारं,
श्रुत्वाऽभिनिष्क्रम्य प्रहाय भोगान् ।
कुटुंबसारं विपुलोत्तमं तं,
राजानमभीक्ष्णं समुवाच देवी ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थ—(**ससुतम्**) पुत्र सहित (**सदारम्**) स्त्री सहित (**तम्**) वह (**पुरोहितम्**) पुरोहित (**भोगान्**) भोगों को (**प्रहाय**) परित्याग कर (**अभिनिष्क्रम्य**) संसार से निकलते हैं 'ऐसा' (**श्रुत्वा**) सुनकर (**विपुलोत्तमम्**) प्रचुर प्रधान (**कुटुम्बसारं**) धन धान्यादि 'ग्रहण करने वाले' (**तम्**) उस (**राजानम्**) राजा को (**देवी**) पटराणी (**अभीक्ष्णम्**) बार बार (**समुवाच**) कहने लगी ॥३७॥

भावार्थ—पुरोहित और उस की स्त्री ये दोनों पुत्रों के वैराग्यमयी वाक्यों को श्रवण कर पुरोहित व स्त्री और दोनों पुत्र चारों ही व्यक्ति भोगों को परित्याग कर रहे हैं। और क्रोड़ों रूपयों की सम्पत्ति को ज्यों की त्यों घर पर छोड़ कर संयम मार्ग को ग्रहण करने के लिये जा रहे हैं। यह खबर सुनते ही राजा उसकी सब सम्पत्ति राज्य भण्डार में डलवाने का अनुचरों को हुक्म दे दिया तदनु यह सूचना दासी द्वारा राणी को मालूम होते ही अपने प्राण पति नरेश के पास आ कर यों कहने लगी ॥ ३७ ॥

मूल—वंतासी पुरिसो रायं, न सो होइ पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं, धणं आदाउमिच्छसि ॥ ३८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छाया—वान्ताशी पुरुषाराजन् न सोभवति प्रशंसितः ।
ब्राह्मणेन परित्यक्तं धनमादातुमिच्छसि ॥३८॥

अन्वयार्थ—[राजन्] हे राजन् [वान्ताशि] वमन किये हुवे पदार्थ को खाने वाला [पुरुषः] मनुष्य [सः] वह [प्रशंसितः] प्रशंसा पात्र [न] नहीं [भवति] होता है [ब्राह्मणेन] ब्राह्मणने [परित्यक्तं] त्यागा हुआ [धनम्] धन [आदातुम्] लेने को [इच्छसि] इच्छा करते हो ॥ ३८ ॥

भावार्थ—हे प्राणनाथ नृपते ! जैसे किसी पुरुष को उष्टी हुई उसी ही उष्टी को कुत्ते काग के सिवाय वही पुरुष पुनः भक्षण करना चाहे तो वह क्या प्रशंसनीय हो सकता है ! कभी भी नहीं। ऐसे ही हे नाथ आप जो धन ब्राह्मण को संकल्प कर चुके। उसी को आप लेना स्वीकार कर रहे हैं। यह कहां तक योग्य और उचित है। आप स्वयं हृदय पर हाथ धर कर इस बात को कुछ देर के लिये सोचें ॥ ३८ ॥

मूल—सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वापि धणं भवे ।
सव्वंपि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तवं ॥३९॥

छाया—सर्वंजगद्यदि तव, सर्वं वापि धनं भवेत् ।
सर्वमपि तवापर्याप्तंनैव त्राणाय तत्तव ॥३९॥

अन्वयार्थ—[यदि सर्वम्] यदि सर्व [जगत्] लोक [चापि] और भी [सर्वम] सर्व [धनम्] धन [तव]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुम्हारे [भवेत्] हो जावे 'तदपि' [तव] तुम्हारे [सर्वमपि] सर्व भी [अपर्याप्तम्] अपूर्ण है [तत्] वह 'सब जगत् व धन' [तव] तुम्हारे [त्राणाय] रक्षा के लिये [नैव] नहीं है ॥ ३६ ॥

भावार्थ-हे प्राणेश्वर ! यदि आप को सारा जगत् का राज्य मिल जावे और पृथ्वी भर का सब धन हस्तगत हो जावे। तदपि आप की इच्छा कभी भी परिपूर्ण नहीं होगी । ज्यों ज्यों धन व राज्य बढ़ता जायगा त्यों त्यों इच्छा बढ़ती ही जायगी फिर वही राज्य और धन अन्त समय में कुछ भी काम आने वाले नहीं हैं। और न वे यमराज की दी हुई यातना में रक्षा कर सकेंगे ॥३६॥

मूल—मरिहिसि रायं जया तया वा,
मणोरमे कामगुणे पहाय ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ताणं,
न विज्जइ अज्जमिहेह किंचि ॥४०॥

छाया—मरिष्यसि राजन् यदा तदा वा,
मनोरमान् कामगुणान् विहाय ।
एक एव धर्म्मो नरदेव त्राणं,
न विद्यतेऽन्यदिहेह किञ्चित् ॥४०॥

अन्वयार्थ—[राजन्] हे नरेश [यदा तदा वा] जब तब [मनोरमान्] मनोहर [कामगुणान्] कामभोगों को [विहाय] छोड़ कर [मरिष्यसि] मरोगे [नरदेव]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भृगु चरित्र

दोनों लडकों को ढूंढने के लिए भृगु पुरोहित और उनकी स्त्री दोनो गाँवसे निकल कर जंगल की ओर जा रहे हैं । और लड़के दोनों सामने आरहे हैं ।

Lakshmi Art, Bombay, 8.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हे मनुष्यों के देव [एक एव] एक ही [धर्मः] धर्म [त्राणम्] शरण भूत 'होगा' [अन्यत्] दूसरा [इहेह] यहाँ पर [किञ्चित्] कोई भी [न] नहीं [विद्यते] है ॥४०॥

भावार्थ-हे राजन्! इन प्रधान काम भोगों को छोड़ कर किसी एक समय में आखिर मरना पड़ेगा अमर हो कर कोई नहीं आया है। देखिये कैसे २ चक्रवर्ति राजा, जो कि मरना जानते ही न थे वे भी दुनिया से चल बसे, सब उन के ऐश आराम की चीज़ें यहीं धरी रह गई हैं। पर भव में माता, पिता, भगिनी, औरत पुत्र, धन, राज, कोट, किला कोई भी चीज़ शरणभूत नहीं हो सकेंगे। केवल एक धर्म ही अवश्य आप की यातना में हाथ बटायेगा ॥ ४० ॥

राजा अपनी प्रियपत्नि के मार्मिक वचनों को सुनते ही चमक कर बोला, रानी ठेर कुछ ठेर, बोलने में इतनी जल्दी मत कर। क्या तेरा चित्त व्याकुल तो नहीं हो गया है। राज्य में धन आता है वह सब ऐसा ही है। ये तेरे सब रत्न जड़ित चन्द्रहार आदि आभूषण इसी धन के बने हुए हैं। जैसा तू मुझे उपदेश कर रही है तो क्या तू अमर हो कर आई है यह तो एक वह बात हुई जैसे किसी कवि ने कहा कि "पर उपदेश कुशल बहुतेरे.....हे राणी पहिले तो राज्य छोड़ साध्वी बन जा फिर मुझे उपदेश करना। इस प्रकार अपने प्राणेश्वर के वचन सुनते ही राजा से राणी यों बोली ॥

मूल—नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा,
संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा,
परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥ ४१ ॥

छाया—नाहं रमे पक्षिणि पंजरे इव,
छिन्नसन्ताना चरिष्यामि मौनम् ।
अकिंचना ऋजुकृता निरामिषा,
परिग्रहारम्भदोषनिवृत्ता ॥ ४१ ॥

अन्वयार्थ—[पंजरे] पिंजरे में [पक्षिणीव] पक्षिणी के जैसे [अहम्] मैं [न] नहीं [रमे] आनन्द पाती हूँ अत एव' [अकिंचना] द्रव्य रहित [ऋजुकृता] सरल [निरामिषा] विषय रहित [आरम्भपरिग्रहदोषनिवृत्ता] आरम्भ परिग्रह दोषों से विरक्त हो [मौनम्] साधुवृत्ति को [चरिष्यामि] अङ्गीकार करूंगा ॥ ४१ ॥

भावार्थ—हे प्राणनाथ ! जैसे पक्षिणी पिंजरे में खान पान आदि सब सुविधाएं होते हुए भी दुःख अनुभव करती है। ऐसे ही इस राज्य और भव रूप पिंजरे में मैं भी आनन्द नहीं पा रही हूँ। यदि आप मुझे आज्ञा देदे तो मैं स्नेह रूप सन्तति को छोड़ कर, विषय वासना से मुँह मोड़ दूँ। सब ये हीरे पन्ने से मढ़ित गहने शरीर से उतार कर सरल स्वभाविका बनूँ । और आरम्भ परिग्रह से उत्पन्न होने वाले दोषों का परित्याग कर आर्यिका अर्थात् साध्वी बनूंगी ॥ ४१ ॥

मूल—दवग्गिणा जहा रण्णे,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दज्झमाणेसु जंतुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयंति,
रागद्दोसवसं गया ॥ ४२ ॥

छाया—दवाग्निना यथाऽरण्ये, दह्यमानेषु जन्तुषु ।
अन्ये सत्त्वाः प्रमोदयन्ते, रागद्वेषवशंगताः ॥४२॥

अन्वयार्थ—[यथा] जैसे [दवाग्निना] दावानल कर के [जन्तुषु] प्राणि [दह्यमानेषु] जलते हुवे [अरण्येषु] बन में [रागद्वेषवशंगताः] रागद्वेष के वशीभूत हुए [अन्ये] दूसरे [सत्त्वाः] प्राणि [प्रमोदयन्ते] आनन्दित होते हैं ॥ ४२ ॥

भावार्थ—हे नाथ ! जैसे किसी एक जंगल में दावानल कर के हिरन खरगोश आदि मूक प्राणी जल रहे थे, उस समय दावानल के निकटवर्त्ति दूसरे हिरन खरगोश आदि जानवर जिन के समीप अभी तक वहाँ अग्नि पहुँची नहीं, वे सभी प्राणी उस घटना को देख कर बड़े खुशी मनाते हैं। पर वे मूढ यों नहीं जानते हैं कि जो घटना वहाँ हो रही है वही घटना हमारे पर भी क्षण मात्र में घटने वाली है ॥ ४२ ॥

मूल—एवमेव वयं मूढा,
कामभोगेसु मुच्छिया ।
डज्झमाणं न बुज्झामो,
रागद्दोसग्गिणा जगं ॥ ४३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छाया—एवमेव वयं मूढा, कामभोगेषु मूर्च्छिताः ।
दह्यमानन्न बुध्यामहे, रागद्वेषाग्निना जगत् ॥४३॥

अन्वयार्थ—(एवमेव) इसी तरह से (वयम्) अपन भी (मूढाः) मूढ हो रहे हैं 'जो कि' (कामभोगेषु) कामभोगों में (मूर्च्छिता) मूर्च्छित होते हुए (रागद्वेषाग्निना) राग, द्वेष रूप अग्नि कर के (दह्यमानं) जलते हुए (जगत्) संसार को न नहीं (बुध्यामहे) जानते हैं ॥ ४३ ॥

भावार्थ—हे प्राणेश्वर ! जैसे वे प्राणी औरों को जलते हुए देख कर आनन्दित होते हैं। इसी प्रकार अपन भी कैसे मूर्ख हैं जो कि काम भोगों में मूर्च्छित हो कर राग द्वेष रूप अग्नि कर के सारे जगत को जलते हुए देख कर अपन ज्ञान प्राप्त नहीं करते हैं । जैसे वे मर रहे हैं और उनके लिये जो घटना हो रही है वह एक रोज अपने पर भी होगी ॥ ४३ ॥

मूल—भोगे भोच्चा वमित्ता य,
लहुभूयविहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छंति,
दिया कामकमा इव ॥ ४४ ॥

छाया—भोगान् भुक्त्वा वान्त्वा च,
लघुभूतविहारिणः ।
आमोदमाना गच्छन्ति,
द्विजाः कामक्रमा इव ॥ ४४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्वयार्थ—(**भोगान्**) भोगों को (**भुक्त्वा**) भोग कर (**च**) और 'उत्तकाल में'(**वान्त्वा**) त्याग कर (**लघुभूतविहारिणः**) हलका विहार (**कामक्रमाः**) यथेच्छा पूर्वक (**द्विजा इव**) पक्षि के जैसे यद्वा ब्राह्मण के जैसे (**आमोदमानाः**) आनन्दित होते हुए (**गच्छन्ति**) विचरते है ॥ ४४ ॥

भावार्थ-हे प्राणेश्वर ! अपन संसार में सब ऐश आराम कर चुके हैं कोई भी बात की कमी नहीं रही है । अत एव अब इन्ह भोगों को परित्याग कर द्रव्य से भाव से हलके वायु के समान यथेच्छा पूर्वक आनन्दित होते हुवे संयम मार्ग में विचरें । जैसे पक्षि यद्वा भृगुपुरोहित और उसकी स्त्री व दोनों पुत्र संसार को परित्याग कर संयम मार्ग में विचरते हैं ॥ ४४ ॥

मूल—इमे य बद्धा फंदंति,
मम हत्थऽज्जमागया ।
वयं च सत्ता कामेसु,
भविस्सामो जहा इमे ॥ ४५ ॥

छाया—इमे च बद्धाः स्पन्दंते,
मम हस्तमार्य्य आगताः ।
वयञ्च सक्ताः कामेषु,
भविष्यामोयथेमे ॥ ४५ ॥

अन्वयार्थ—(**आर्य्य**) हे आर्य (**बद्धाः**) सुरक्षित (**इमे**) ये भोग (**मम**) मेरे (च) और 'उपलक्षणसे तुमारे' (**हस्तम्**)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसगत (आगताः) हो रहे हैं ' वे कैसे है ' (स्पन्दन्ते) अस्थिर है ' तदपि (वयं) अपन (कामेषु) काम भोगों में (सक्ताः) आसक्त हो रहे है ' इसलिये ' (इमे) पुरोहितादिके (यथा) जैसे (भविष्यामः) होवे ॥ ४५ ॥

भावार्थ-हे आर्यपते ! भोगोपभोग की सामग्री आपको और मेरे को जो मिली है उसको अनेक उपाय करके सुरक्षित रखने का प्रयत्न करते हैं, पर वे आखिर अस्थिर है । तदपि उन भोगों में आसक्त होते हुए तनिक भी विचार नहीं करते हैं कि भोगों को अपन नहीं छोड़ेंगे तो भोग अपने को उत्तर देवेंगे । इस से तो यही अच्छा है कि पहले ही उन्ह भोगों को छोड़ कर पुरोहितादि के जैसे अपन भी साधुवृत्ति ग्रहण करे ॥ ४५ ॥

मूल—सामिसं कुललं दिस्स,
बज्झमाणं निरामिसं ।
आमिसं सव्वमुज्झित्ता,
विहरिस्सामो निरामिसा ॥ ४६ ॥

छाया—सामिष कुललं दृष्ट्वा, बाध्यमानं निरामिषम् ।
आमिषं सर्वमुज्झित्वा, विहरिष्यामि निरामिषाः ॥४६॥

अन्वयार्थ—(सामिषम्) मांस सहित (बाध्यमानं) पीड़ित (कुललम्) गृध पक्षिको ' और ' (निरामिषम्) मांस रहित गृध पक्षिको ' सुख अवस्था में ' (दृष्ट्वा) देख कर (सर्वम्) सम्पूर्ण (आमिषम्) ' धन धान्य रूप '

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आमिष (उज्झित्वा) त्याग कर (निरामिषाः) आमिष रहित होती हुई (विहरिष्यामि) गमन करूंगी ॥४६॥

हे प्राणेश्वर ! किसी एक गृध्र पक्षि के पास मांस की बोटी देख कर अन्य पक्षि उसे पीड़ित कर देते हैं। और जिस के पास मांस वगैरा कुछ भी नहीं होता है वह आनन्द में निर्भयता के साथ रहता है। इन दोनों ही अवस्था में उस पक्षिको देख कर मुझे बड़ा विचार आता है कि अपने पास भी धन, भण्डार, राज्य, भोग रूप मांस की बोटी है। उसकी रक्षा के लिये रात और दिन चिन्ता बनी रहती है। कोई धन चोर कर न लेजावे, कोई राज्य के उपर अमला न करले। इत्यादि अनेक दुःखों से पीड़ित हो रहे हैं। इस से यह अच्छा है कि जिस गृध पक्षि के पास मांस की बोटी नहीं है वह निर्भयता से रहता है। ऐसे ही हे प्राण-पते मैं भी राज्य भोग रूप मांस बोटी को परित्याग कर संयम मार्ग में विचरूंगी ॥ ४६ ॥

मूल—गिद्धोवमे उ नच्चाणं, कामे संसारवड्ढणे।
उरगो सुवण्णपासेव्व, संकमाणो तणुं चरे ॥४७॥

छाया—गृद्धोपमास्तु ज्ञात्वा, कामान् संसारवर्द्धनान्।
उरगः सौपर्णेयपार्श्वे इव, शङ्कमानस्तनुञ्चरेत् ॥४७॥

अन्वयार्थ—(संसारवर्द्धनान्) संसार वर्धक (कामान्) काम भोगों को (गृद्धोपमास्तु) गृध पक्षि के समान (ज्ञात्वा) जानकर (सौपर्णेयपार्श्वे) गरुड के पास में (उरगः) सर्प के (इव) जैसे (शङ्कमानः) संकुचित होता हुआ (तनुम्) मन्दगति से (चरेत्) जाता है ॥ ४७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ-हे नाथ ! गृध पक्षि के समान काम भोगों को संसार वर्धक जानकर परित्याग कर दें । जैसे सर्प गरुड़ से भयभीत होता हुआ उसके पास से कैसा चंपत हो जाता है । ऐसे ही अपन भी इन्ह काम भोगों से चंपत हो कर संयम स्थान में विचरे ॥ ४७ ॥

मूल--नागोव्व बंधणं छित्ता, अप्पणो वसहिं वए।
एयं पत्थं महारायं, उसुयारित्ति मे सुयं ॥४८॥

छाया--नाग इव बन्धनञ्छित्वात्मनो वसतिं व्रजेत् ।
एतत्पथ्यं महाराज, इक्षुकार इति मे श्रुतम् ॥ ४८ ॥

अन्वयार्थ--(**इक्षुकार**) इक्षुकार नाम के (**महाराज**) हे महाराज (**नाग इव**) हाथी के जैसे (**बंधनम्**) बन्धन को (**छित्वा**) तोड़ कर (**आत्मनः**) आत्मा के (**वसतिम्**) निवास स्थान को (**व्रजेत्**) जावे (**एतत्**) यह (**पथ्यम्**) हितकारी 'मार्ग को' (**इति मे**) मैं ने (**श्रुतम्**) श्रवण किया था ॥ ४८ ॥

भावार्थ-हे इक्षुकार नाम से सुशोभित महाराज ! जैसे हाथी अपना मजबूत बंधन भी जैसे तैसे तोड़ कर बंध्या अटवी को चला जाता है । ऐसे ही आत्मा भी जन्म जन्मान्तर में किये हुए कर्म रूप बंधन को संयम रूप कैंचे से तोड़ कर शुद्ध आत्मा के स्थान पर पहुँच जाती हैं । उपरोक्त मार्ग मैं ने सुगुरू द्वारा श्रवण किया है इस लिये अपन भी जन्म जन्मान्तर में किये हुए कर्म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बन्धन को तोड़ कर मोक्ष स्थान को प्राप्त करें। इस प्रकार वैराग्य भरी बातें रानी की सुन कर राजा को भी वैराग्य हो गया ॥४८॥

मूल—चइत्ता विउलं रज्जं,
कामभोगे य दुच्चए।
निव्विसया निरामिसा,
निन्नेहा निप्परिग्गहा॥ ४९ ॥

छाया— त्यक्त्वा विपुलं राज्यं, कामभोगांश्च दुस्त्यजान्।
निर्विषयौ निरामिषौ, निःस्नेहौ निष्परिग्रहौ ॥ ४९ ॥

अन्वयार्थ—(विपुलम्) लम्बा चौड़ा (राज्यम्) राज्यको (च) और (दुस्त्यजान्) त्यागना कठिन ऐसे (कामभोगान्) कामभोगों को (त्यक्त्वा) छोड़कर (निर्विषयौ) विषयवासनादि रूप (निरामिषौ) आमिष करके रहित (निःस्नेहौ) स्नेह (निष्परिग्रहौ) परिग्रह रहित ' होवे ' ४९ ॥

भावार्थ-राजा और रानी दोनों लम्बी चौड़ी सीमावाला राज्य और दुस्त्याज्य काम भोगों को छोड़कर विषयवासना, धन धान्य रूप आमिष, स्नेह रूप प्रतिबन्ध आरम्भ परिग्रह आदि से रहित हुए ॥ ४९ ॥

मूल—सम्मं धम्मं वियाणित्ता,
चेच्चा कामगुणे वरे।
तवं पगिज्झाहक्खायं,
घोरं घोरपरक्कमा ॥ ५० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छाया—सम्यक् धर्म्मं विज्ञाय, त्यक्त्वा कामगुणान् वरान् ।
तपःप्रगृह्य यथाख्यातं घोरं घोरपराक्रमौ ॥ ५० ॥

अन्वयार्थ—(सम्यक्) शुद्ध (धर्म्मम्) धर्म को (विज्ञाय) जान कर (वरान्) प्रधान (कामगुणान्) काम भोगों को (त्यक्त्वा) छोड़कर (यथाख्यातम्) जिस प्रकार का प्ररूपित (घोरम्) दुष्कर (तपः) तप को (प्रगृह्य) अङ्गीकार कर (घोरपराक्रमौ) ' कर्मों का नाश करने में ' अत्यन्त पराक्रम करें ॥ ५० ॥

भावार्थ-अव्याप्त, अतिव्याप्त, असंभव तीनों दोषों कर के रहित शुद्ध धर्म को राजा और रानी दोनों ने पहिचान कर हस्तगत प्रधान काम भोगों का परित्याग कर दिया। और अर्हत् भगवतोंने जिस प्रकार प्रतिपादन किया है उसी प्रकार दुष्कर तप व्रत को अङ्गीकार कर रौद्र कर्मोंका नाश करने में अत्यन्त पराक्रम करने को प्रवर्त हुए ॥ ५० ॥

मूल—एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा ।
जम्ममच्चुभउव्विग्गा, दुक्खस्संतगवेसिणो ५१

छाया—एवं ते क्रमशो बुद्धाः, सर्वे धर्म्मपरायणाः ।
जन्ममृत्युभयोद्विग्ना, दुःखस्यान्तगवेषिणः ॥ ५१ ॥

अन्वयार्थ—(एवम्) इस प्रकार (ते) वे (सव्वे) सब छःओं (जन्ममृत्युभयोद्विग्नाः) जन्ममृत्यु के भय से उद्वेग पाते हुए (क्रमशः) अनुक्रम से (बुद्धाः) तत्वज्ञ हुए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भृगु चरित्र

वैराग्य पाकर भृगु पुरोहित और उनकी स्त्री एवम् दोनो लड़के क्रोडों की सम्पति को ज्यां कीं त्यों छाड़ कर मुनि वृत्ति ग्रहण करने के लिये जा रहे हैं। और आई हुई धन की गाडियोंको देखकर रानी अपने राजा को कह रही है कि धन सम्पति नश्वर है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

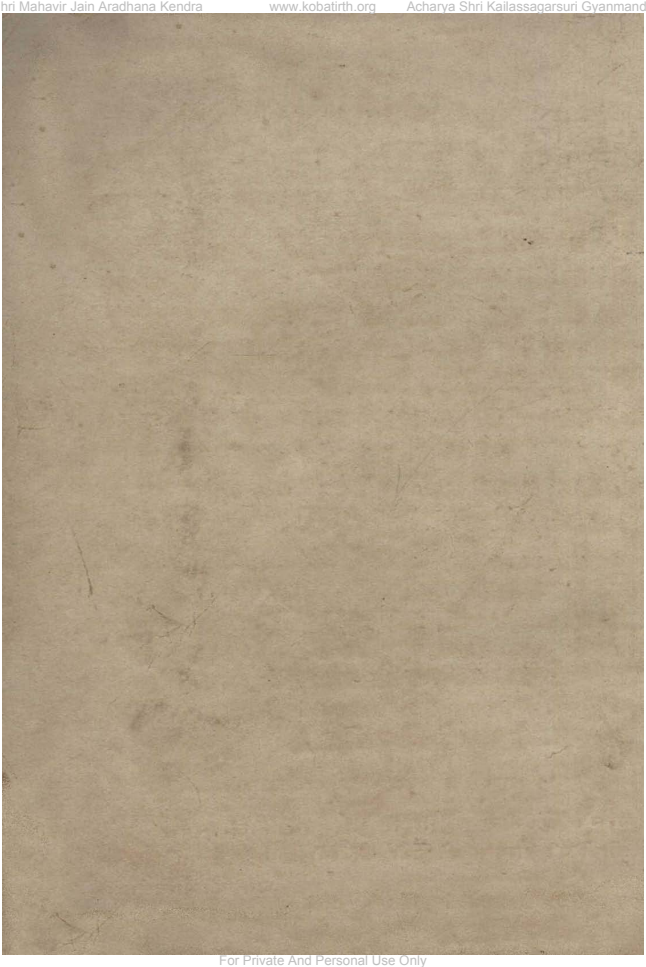

For Private And Personal Use Only